RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 9	शुक्रवार 10 सितम्बर 1982	संख्या 5

Board of trustees of Faqir Library Charitable Trust (Regd.) Manavta Mandir

HOSHIARPUR.

1. Sh. Vishwa Mittra, Maraj. W. Indies
2. Dr. Ram Dev Rao, U. S. A.
3. Sh. K. M. Pardesi, President
4. Master Mohan Lal, Vice President
5. Sh. Subash Chander. Kalia, General Secretary
6. Sh. Harbans Lal, Joint Secretary
7. His Holiness Anand Dayal Ji Maharaj
8. His Holiness Anand Rao ji Maharaj
9. Sh. S. N. Bhardwaj, Retd. Principal
10. Dr. K. L. Jaura, Retd, Univ. Professor
11. Sardar Lal Singh
12. Dr. Darshan Singh
13. Sh. Puran Chand.
14. Pt. Narain Dass Dogra
15. Sh. Nand Singh Sihra, Canada

Executive Secretary cum Cashier

Dr. Paras Ram Aggarwal

सत्संग परम सन्त परम दयाल फ़क़ीर चन्द जी महाराज, इन्दौर ।

दिनांक 19-2-79

मैं पहिले अपने आप से पूछता हूँ तू क्या करता है ? दोस्तो ! 93 साल का हो गया, राम को मिलने के लिए निकला था, किस्मत सन्तमत में ले आई। इनकी वाणियाँ पढ़ीं, समझ नहीं आती थीं, गुरु महाराज को तंग किया करता था। उन्होंने एक काम दिया था, बस एक ख़्याल से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता, मुझको सन्तमत की समझ आई। अपने आप को उस घर में ठहराने की कोशिश करता हूँ जहाँ से कि मैं आया हूँ। हर एक शख़्स जो दुनिया में आया उसने रिसर्च की। जो रिसर्च मैंने की वह कहे जाता हूँ, ख़बर नहीं सच है या झूठ है, मुझे क्या पता। मैं अपनी नीयत से सच

कहता हूँ। हमारे शास्त्र कहते हैं कि यह देश कालदेश है, मायादेश है। सन्तों ने मायादेश, कालदेश और दयालदेश दर्ज रखे। मैं जो कुछ कहता हूँ अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ मगर यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठीक है।

यहाँ मुन्शीलाल जी आये हुए हैं इनके दो लड़के हैं, एक ने कहा मैं परीक्षा हाल में प्रकट हुआ, डेस्क के नीचे बैठ गया। उसको साईन्स का पर्चा नहीं आता था मैं बोलता गया वह लिखता गया। उसको सौ में से अठानवे नम्बर आये परन्तु मेरे शरीर को कुष्ठ पड़े यदि मैं झूठ बोलूं, मैं सच कहता हूँ मैं नहीं गया। उनका दूसरा लड़का कहता है हम तीन लड़के पहाड़ में खेलने के लिए गये। ऊपर से बड़ा भारा पत्थर पड़ा उसकी टाँग टूट गई। पत्थर उठता नहीं था वह कहता है बाबा! आपको याद किया, आपने आकर के पत्थर को उठा के फेंक दिया और मैं कहता हूँ कि मैं नहीं गया। इसी तरह से और भी घटनाएँ मैं बताता रहता हूँ, तुम्हारी लड़की कहती है उसकी चाची

की टाँग में दस साल से दर्द थी, वह रोज़ मेरे अ
प्रार्थना करती थी कि मेरा दर्द चला जाय। मानव
मन्दिर पत्रिका भी पढ़ती थी। वह कहती है रात को
स्वप्न में मैं आया, मैंने पूछा बेटी, कहाँ दर्द है ? टाँग में
दर्द है। आपने मेरी टाँग पर हाथ फेरा सुबह उठी,
दर्द नहीं था और मैं धर्म से कहता हूँ मैं नहीं
गया। उसका लड़का उसको तंग करता था वह
अपने अन्तर मेरे आगे प्रार्थना करती थी कि मेरा
लड़का ठीक हो जाय। लड़के के अन्दर मेरा रूप
स्वप्न में प्रकट हुआ और कहा तू माँ का कहना
नहीं मानता तेरे बाज़ू टूट जायेंगे और ऐक्सिडेण्ट हो
गया। चूँकि मैं नहीं था, इन बातों ने मुझे क्या
सबूत दिया कि इन्सान के मन में बहुत बड़ी ताक़त
है। लोग मेरा रूप बना कर उससे काम ले लेते हैं,
उसमें शरीर भी है, मन भी है और रूह भी है।
इसी तरह से जिस ताक़त ने दुनिया को बनाया है
उसका ज़िस्म भी है, मन भी है और रूह भी है।
वह अपने संकल्प से दुनिया रचता है। शास्त्र उसके
ज़िस्म को विराट् पुरुष कहते हैं, उसके मन को
अव्याकृत कहते हैं और हिरण्यगर्भ उसका रूप है।

यह दुनिया ख़्याल की है, संकल्प की है। कल मैंने निवृत्तिमार्ग पर बोला। सोचता हूँ ऋषियों और सन्तों ने निवृत्तिमार्ग का क्यों ख़्याल किया ? क्योंकि इस दुनिया में सुख नहीं। कोई शख़्स ऐसा नहीं जिसको कोई न कोई दुःख न हो। कोई सुखी नहीं अगर दुनिया में सुख है भी तो स्थायी नहीं। कभी मैं जवान था अब बूढ़ा हो गया, टाँगे नहीं चलतीं। यह माई है लीला की माँ, यह बूढ़ी हो गई। तो इस ख़्याल को लेकर रिसर्च करने वाले आदमी ने सोचा कि कोई ऐसा स्थान है जहाँ हम इस जन्म-मरण से बच जायें ? इसलिए जो कुछ उनकी समझ में निवृत्तिमार्ग आया वह उन्होंने बता दिया और मैंने जो समझा वह कल कह दिया। मैंने साईन्स को मुख्य रखा क्योंकि वर्तमान समय में साईन्स जो सिद्ध करती है उसको कोई काट नहीं सकता और साईन्स बदलती रहती है, अनुभव बदलते रहते हैं। इसी तरह से मज़हबी दुनिया में मज़हब बदलते रहते हैं। कोई वक्त था आदमी की अक़ल ऐसी थी कि वो पीपल को पूजते थे, कोई लताओं को पूजते थे। फिर कोई राम, ब्रह्म,

ईश्वर व परमात्मा को पूजने लगे, फिर शब्द और प्रकाश आ गया और फिर ज़माने में गुरु की पूजा हो गई। इन्सानी ज़िन्दगी तजुर्बा करती आई परन्तु यह तजुर्बा ठीक है कि ख़्याल में ताक़त है, यह ख़्याल की दुनिया है। तो ख़्याल की दुनिया को समझ कर मैंने जो आज़माया वह कहता हूँ।

पहिली बात, जिस ख़्याल, जिस आस को लेकर हम इन्सानी नसल एक दूसरे से मिलते हैं, काम भोगते हैं, जिस किस्म के ख़्याल, आशा, नीयत, स्त्री-पुरुष की होती है उस किस्म का असर बच्चे में जाता है। मैं कोई बात बिना सबूत के नहीं कहता, आप को सबूत देता हूँ। मेरी बड़ी लड़की है, उस वक्त मैं मज़हबी दुनिया का आदमी था। सुना करता था कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार बुरे होते हैं तो मैं यह चाहता था कि मेरी ऐसी औलाद हो जो न कामी हो, न क्रोधी हो, न लोभी, न मानी और न अहंकारी हो। वह लड़की हो गई। शादी भी मैंने कर दी परन्तु खसम ने बसाई नहीं और न वह

बसो, नीम उन्मत्त है। और मेरी बेवक़ूफी यह थी कि दाता दयाल चले गये थे अमरीका। मेरा उनसे प्रेम था, मैं उनके आश्रम में गया और जो पुराने कपड़े लंगोटे या कुरते मुझे उनके मिले वे मैं अपने अज्ञान के प्रेम के वश में उनकी कुटिया से ले आया और अपनी औरत को दिये कि जब बच्चा पैदा हो तो इन कपड़ों से साफ़ कर दो। वह उन कपड़ों से साफ़ की गई। अब मैं लाख कोशिश करता हूँ कि वह अच्छे कपड़े पहिने, वह नहीं पहिनती। मैले कपड़े, टाकियाँ लगा कर पहिनती है।

मेरी दूसरी लड़की है वह माँ का कहना नहीं मानती थी। एक दिन मैने उससे कहा बेटी! तेरी माँ शिकायत करती है, वह रो पड़ी। पिता जी! मेरी कोई और शिकायत आपने सुनी? पता नहीं मुझे क्या हो जाता है, मेरी माँ मुझे कुछ कहती है तो मेरे मुँह से कुछ निकल जाता है। पीछे से मैं रोती भी हूँ, पीटती भी हूँ परन्तु मुझसे रहा नहीं जाता। अब वह क्यों ऐसा करती थी? मेरे औलाद थी, मुझको औलाद की ख़्वाहिश नहीं थी,

मेरी बीबी को भी औलाद का ख़्वाहश नहीं थी। मैं कामातुर हुआ, आधा घण्टा अपने मन से लड़ता रहा कि कंट्रोल करूँ या न करूँ, जाऊँ या न जाऊँ आखिर काम ने मुझ पर विजय पाई। मुझे याद है कि पहिले दो महीने मेरी स्त्री ने पीपल की जड़ या कोई और दवाई ली कि गर्भपात हो जाय मगर बच्चा नहीं गया। जिस बच्चे को मां आने से पहिले स्वागत नहीं करती तो तुम कैसे उम्मीद कर सकते हो कि वह तुम्हारा आज्ञाकारी होगा। यह ख़्याल की दुनिया है।

अब वह यह शिकायत करती है, पिता जी! दुनिया का कोई काम होता है तो मैं फैसला नहीं कर सकती कि यह करूँ या न करूँ, घर के घरेलू झगड़े होते ही हैं। इसका ज़िम्मेवार कौन है? मैं हूँ। कल मैंने कहा था कि प्रवृत्तिमार्ग पर बोलूंगा, प्रवृत्तिमार्ग क्या है? संकल्प की दुनिया। जिस प्रकार की आशा ले कर स्त्री-पुरुष मिलते हैं उसका संस्कार बच्चे में जाता है। जब मुझे होश आई तो मैंने केवल इस विचार से एक लड़का पैदा किया कि

लड़का लायक हो और पब्लिक सर्विस करे। लड़का पैदा हुआ वह पब्लिक सर्विस करता है, भिलाई में बहुत बड़ा इञ्जीनियर है। छः भट्ठियाँ और बारह सौ आदमी उसके नीचे काम करते हैं। तो मैं आज क्या कहना चाहता हूँ कि अगर इन्सान यह चाहता है कि मेरी औलाद ठीक रहे, मैं औलाद से सुखी रहूँ तो उसको औलाद के ख़्याल से औलाद को पैदा करना चाहिए, यह मेरे पास सबूत है। परन्तु हम लोग क्या करते हैं, हम लोग अपनी कामपूर्ति के लिए विषय भोगते हैं, बच्चे पेट में आ जाते हैं। तुम कैसे उम्मीद कर सकते हो कि वे लड़के माँ-बाप के आज्ञाकारी होंगे और देश की सेवा करेंगे, बताओ ?

तो जो दुनिया में प्रवृत्तिमार्ग में सुख चाहते हैं उनका सबसे पहिला फ़र्ज़ यह है कि वे बचपन में अपने ब्रह्मचर्य की सम्भाल रखें। क्यों ? क्योंकि चालीस बूंद खून से एक बूंद ओजस् बनता है और चालीस बूंद ओजस् हो तो एक बूंद वीर्य बनता है। जो लड़के चौबीस साल की उम्र से पहिले अपने

ब्रह्मचर्य को अपने हाथ से या किसी ग़लत तरीक़े से खोते हैं उनका दिमाग़ ठीक नहीं रहता। ये तजुर्बे की बातें हैं। उनको या डाक्टर लूटते हैं या मेरे जैसे साधु लूटते हैं, उनमें से एक मैं भी हूँ। तेरह साल की उम्र में शादी हुई, साढ़े सोलह साल की उम्र में गृहस्थ में फँसा, अशान्त हो गया। फिर राम की तलाश करने लगा। ये जितने ज़्यादा भक्ति करने वाले इन्सान हैं सिवाय अपवाद के, इनमें पेशाब की बीमारी कोई न कोई होती है। फिरोज़पुर में एक बहुत बड़े हकीम थे। दाता दयाल जब गिद्दड़बाहे आये वह उनके पीछे ऐसे फिरता था जैसे परवाना शमा के पीछे फिरता है। मैं वहाँ मौजूद था। वह हकीम मेरा दोस्त था। मैंने उससे कहा, तेरा इलाज़ दाता दयाल के पास नहीं है। उसने कहा, तुम कर दो। मैंने कहा, दाता दयाल के शरीर त्यागने के बाद करूंगा। छः महीने के बाद दाता दयाल का चोला छूटा तो वह मेरे पास फरीदकोट आया जहाँ मैं स्टेशन मास्टर था। मैंने उसको बोला, तू महाव्यभिचारी है। वह नाराज़ हुआ,

कहने लगा कि मैं कसम से कहता हूँ कि मैं अपनी औरत के सिवाय किसी और औरत के पास नहीं गया। मैंने पूछा तुम्हारी शादी कब हुई ? चौदह साल की उम्र में। गृहस्थ कब से भोगना शुरू किया ? चौदह साल की उम्र से। बहुत भोगा, मैं हकीम हूँ, दवाइयाँ खाता था और भोगता था। मैंने कहा, विषय घर में भोगा या बाहर भोगा, तेरी अशान्ति का कारण तेरा विषय-विकार का जीवन है।

राष्ट्र के बनाने वाले लीडर नहीं हैं बल्कि माताएँ हैं। यदि लीडर होते तो महात्मा गांधी बना जाते या कोई और बना जाता। इसलिए हिन्दु क़ौम स्त्री जाति का आदर करती है। छोटी लड़की को दुर्गा का रूप बताते हैं, जवान हो जाय उसको लक्ष्मी कहते हैं, बूढ़ी हो जाय उसको पार्वती माता कहते हैं। जिस क़ौम में, जिस मुल्क में स्त्री जाति का आदर नहीं है वह क़ौम बरवाद हो जायेगी यह मैं इस प्रवृत्तिमार्ग में कहना चाहता हूँ। अभिमन्यु जब मां के पेट में था तो अर्जुन अपनी स्त्री के साथ चक्रव्यूह का ज़िक्र कर रहा था। जब तक चक्रव्यूह में प्रवेश करने का

ज़िक्र किया वह जागती रही, जब चक्रव्यूह से निकलने का ज़िक्र आया वह सो गई। अभिमन्यु ने तेरह-चौदह साल की उम्र में लड़ाई के मैदान में चक्रव्यूह को तोड़ा मगर बाहर न निकल सका, वहीं मारा गया। दूसरी बात अकबर बादशाह की है। हुमायूं दुश्मन के डर के मारे जगल में छुपा हुआ था, उसकी बेगम के पेट में बच्चा था। अचानक हुमायूं गया तो बेगम अपने पैर के तलवे पर हिन्दुस्तान का नक्शा बना रही थी। हुमायूं ने पूछा, बेगम! क्या करती है? उसने बोला कि मैं यह चाहती हूँ कि मेरे जो यह लड़का पैदा होगा वह इतने मुल्क का राजा हो और वही हुआ। तीसरा उदाहरण मैं अपना देता हूँ। मैं सिपाही का लड़का हूँ। मेरी पैदायश मेरे मां-बाप की शादी के बारह साल बाद हुई। मेरी मां मुझे कहा करती थी बच्चा! मैं स्टेशन मास्टर को झंडियाँ हिलाते देखती थी। डी. टी. एस. आता उसकी गाड़ी कटती थी। मैं चाहा करती थी कि मेरे भी कोई बच्चे हों जो स्टेशन मास्टर बनें और उनकी गाड़ी कटें। उसकी ख़्वाहिश का यह नतीज़ा निकला कि मैं स्टेशन मास्टर हुआ और

मेरा छोटा भाई ट्रैफिक मैनेजर हो गया। त
प्रवृत्तिमार्ग में मैं आप माताओं को ही नहीं बल्कि तमाम दुनिया की स्त्रियों को कहना चाहता हूँ कि अपनी औलाद को बनाने वाली तुम हो, जैसा तुम्हारा ख़्याल होगा वैसी ही तुम्हारी औलाद होगी।

इसका सारा हिसाब मनुस्मृति में मौजूद है। हम नाम को हिन्दु हैं शास्त्रों को मानते हैं, सनातनी बने हुए हैं, जो कुछ हमारे बुज़ुर्ग हमको कह गये उसको नहीं मानते, हम अपनी मर्ज़ी करते हैं और उसके परिणाम में हम दुःख भोगते हैं।

जब बच्चा पैदा होता है, जो आदमी या औरत पहले-पहल उसको छूता है उसके जो संस्कार होंगे वे थोड़े-बहुत उस बच्चे में जायेंगे। हमारी तरफ पहाड़ में कहा जाता है तुमको किस दाई ने छुआ था। मैं कोई बात बिना सबूत के नहीं कहता, इसका उदाहरण देता हूँ। रेलवे से रिटायर होने के बाद मैंने फिर नौकरी की, फिरोज़पुर में यू. डी. सी. था। वहाँ एक सरदार और यू. डी. सी. मेरे साथ था। उसकी बीबी का यह हाल था कि वह घर में आता

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

वो कहती कि मेरे पेट में दर्द है, मुझे दिन को बुखार था, मेरा सिर दुःखता है। वह बेचारा आता आप आटा गूंदता, रोटी पकाता, आप खाता उसको खिलाता। जब हम चले जाते तो मेरी स्त्री मुझे कहा करती थी उसकी औरत ने हलवा बनाना, खीर बनानी और खूब खाना। उसका एक लड़का था बड़ा सुन्दर! हम उसको देखते थे खुश होते थे। एक दिन मैं अपने मकान में बैठा हुआ था, मकान इतना था कि जिसमें छः कमरे थे। हम तीन आदमी रहते थे, दो कमरे मेरे पास, दो दूसरे के पास और दो तीसरे के पास थे। मूलराज, डिप्टी कमिश्नर का रीडर मेरे पास आया हुआ था और मैं हुक्का पी रहा था। मैंने कहा एक बात कहूँ तुमको? हाँ कहो। मैंने कहा, इसका लड़का मर जायेगा। उसने कहा, क्यों? मैंने कहा, उस औरत के ख़्यालात की वजह से। दीवाली आई, लड़के को न्यूमोनिया हुआ और मर गया। जब वह सरदार लड़के को ले जाने लगा तो उसने ढा मारी तो मूलराज ने कहा कि भाई! आज पन्द्रह-बीस दिन हुए जब तुम्हारा लड़का

बीमार भी नहीं था तो पण्डित जी ने कहा था कि तेरा लड़का मर जायेगा। वह उसको दरिया में डाल कर मेरे पास आया कि आपने कैसे कहा ? मैंने उसको बताया कि यह बात है। तो जिस घर में औरत चालाक होती है पति के साथ, सास के साथ ऐसे हेरफेर करती है या सास दूसरों के साथ करती है वहाँ यही परिणाम हुआ करता है। फिर उसके बाद उसके एक लड़की पैदा हुई वह इक्कीस दिन तक रोती रही। रात को वे कुंडे खड़काते हम भी दुःखी होते। इक्कीस दिन के बाद वह मेरे पास आया कहने लगा, बाबा जी ! यह रोती है इलाज बताओ। मैंने कहा, डाक्टरों को दिखाओ। उसने कहा, पाँच डाक्टरों को दिखाया है वे कहते हैं कि बीमारी कोई नहीं। मैंने कहा, यदि बुरा न मानो तो एक बात कहूँ। उसने कहा, हाँ। मैंने कहा, तेरी बीबी रोती रहती है कहीं वह रोती हो, तुम उसके पास गये हो बच्चा पेट में आ गया हो या जिसने उसको पहिले छुआ है वह दुःखी हो और रोता हो यह पूछ के मुझे बताओ। वह बात ठीक निकली। जिस

दाई को नियुक्त किया हुआ था जब लड़को के पैदा होने का वक्त आया और दाई को बुलाया, उस दाई का सगा भाई चूँकि दो दिन पहिले मर गया था वह स्यापे बैठी हुई थी। वह रोती हुई आई और उसने लड़की को हाथ लगाया। मैंने कहा, इसका इलाज़ मैं कर देता हूँ, मैंने फूल मँगवाये राधास्वामी नाम लिया और उसको दे कर कहा कि चौबीस घण्टे इसके इर्द-गिर्द ये फूल रखो और वह ठीक हो गई।

प्रवृत्तिमार्ग में क्या है ? यही कि बच्चे कैसे पैदा किये जायें। जब बच्चा पेट में होता है सास और बहू लड़ती हैं, पति से लड़ाई होती है और घर में झगड़ा होता है। स्त्री व पुरुष बच्चा पाँचवें, छठे, सातवें और आठवें महीने का होता है भोग करते रहते हैं। वह बच्चा अपने वक्त से पहिले कामी हो जायेगा, अपने वीर्य का नुक़सान करेगा और बुराइयाँ करेगा। एक तो मैं यह तालीम देता हूँ।

आजकल मंगलीक लड़के, लड़कियाँ बहुत पैदा होते हैं, पहिले ज़माने में तो कोई-कोई मंगलीक

होता था। मंगलीक जानते हो न ! ये क्यों होते हैं ? क्योंकि आजकल स्त्री-पुरुष के दिल में वह प्रेम नहीं रहा जो पिछले ज़माने में था। स्त्री-पुरुष मिलते हैं बच्चे पैदा हो जाते हैं, जब दिल न मिला हुआ हो और बच्चे पैदा हों वे मंगलाक होंगे, यह मेरा इल्म है। मेरी बड़ी लड़की मंगलीक है। मैं अपने आप को पूछता हूँ कि तू लोगों को उपदेश करता है क्या तू ठीक कहता है ? हाँ ! देखो हँसी की बात बताता हूँ, आजकल तो लड़के, लड़कियाँ पहिले मिल लेते हैं परन्तु हमारे वक्त में ब्राह्मण या नाई रिश्ता कर देते थे, लड़के को लड़को का पता नहीं होता था और लड़की को लड़के का पता नहीं होता था। हमारे हाँ जब शादी होती है तो लावाँ-फेरे के बाद लड़की को कह देते थे कि तू लड़के को देख ले और एक बार नाम ले ले फिर तुमने नाम नहीं लेना। लड़के को यह कहा जाता था कि तू अपनी बीबी की शक्ल देख ले, एक बार उसका नाम नाम ले ले फिर तुमने बीबी का नाम नहीं लेना। जब ऐसा समय आया तो वे देहात के आदमी थे उन्होंने मेरी बीबी का नाम बचपन से क्रोधू रखा

हुआ था। जब मैंने सुना कि उसका नाम काधू है क्योंकि मैं फ़कीर आदमी था मेरे दिल में यह वहम आ गया कि मेरी इसकी नहीं बनेगी अर्थात् निभेगी नहीं। नाम बदल कर उसका नाम भागवती रख दिया गया परन्तु वह जो भी काम करती, मैंने मारा कभी नहीं, गुस्सा भी कभी नहीं किया परन्तु मेरा दिल नहीं मिलता था। बच्चे तो पैदा होते ही रहते हैं, वह लड़की पैदा हुई। अब आप समझ गये मेरी बात को? उसका जो हाल हुआ वह मैंने तुमको बता दिया।

तो इस प्रवृत्तिमार्ग में जो कुछ है हमारा ख़्याल है। हमारे घर में कोई बीमार हो जाता है तो माताएँ डरती हैं हाय! यह मर न जाय, हाय! यह मर न जाय। वह जो डर हम अपने अन्दर पैदा करते हैं वह बीमार के ऊपर असर करता है। ये प्रवृत्तिमार्ग की बातें मैं आपको बताना चाहता हूँ ताकि इन्सान की ज़िन्दगी सुख और शान्ति से गुज़रे परन्तु आजकल मांएँ, मांएँ नहीं रहीं, लड़के, लड़के नहीं रहे, पति, पति नहीं रहे और बीबियाँ, बीबी नहीं रहीं।

क्या मतलब मेरा कि तुमको, मुझको जो कुछ मिल रहा है वह ख़्याल है हमारा, संस्कार है हमारा, अपना विश्वास। यह मैं क्यों कहता हूँ ? मैंने आज़माया है अपने घर में भी, बाहर में भी।

मेरे मकान के साथ एक प्रो. तलवाड़ आया जिसको दोनों तरफ का अर्थात् दायें व बायें का अधरंग था वह डबल एम. ए. था उसकी स्त्री भी एम. ए. थी। उसकी स्त्री रोज़ मेरी स्त्री को कहा करती थी "बाबा जी को कहो कि हमारा कोई इलाज़ कर दें" औरत मेरी ने मुझको कहना मैंने चुप कर जाना। औरतों में यह नुक्स होता है जब पति रोटी खाने आता है जो घर के दुःखड़े होते हैं उस वक्त वे सुनाती हैं, वह खाना खाता रहता है, बुरी बातें भी और अच्छी बातें भी सुनता रहता है।. वे जो बातें कुढ़ के करती हैं वे उस खाने के साथ जाती हैं और वह बीमार हो जाता है। यह ख़्याल की फिलॉसफी है। मैं चुप कर जाता था। एक दिन मेरी स्त्री मुझे कहने लगी, वे दूसरी स्त्रियाँ तेरे पास आती हैं तू उनकी पीठ पर हाथ फेरता है

और वह खत्री की लड़की है, एम. ए. पास है उ
पति बीमार है, तू कुछ कर सकता है तो कर दे।
मैंने कहा, सिफ़ारिश की यहाँ ज़रूरत नहीं। जब मैं
सुबह समाधि से उठूँ तो उस औरत को बोलो कि
वह मेरे पास आये। दूसरे दिन मैं समाधि से उठा
तो वह औरत मेरे पास आई। मैंने उसको तीन
नसीहतें कीं, बस। मैंने कहा, बेटो! एक तो यह पूरा
ख़याल कर ले कि तेरा पति राज़ी हो जायेगा, कभी
मत सोचना कि यह मर जायेगा और तेरे बच्चे
क्या करेंगे, तू क्या करेगी, यह क्या होगा और वह
क्या होगा। दूसरे जब खाना पकाती है सुमिरन
कर, जब खाना खिलाती है सुमिरन किया कर जो
तेरा मज़हब कहता है। तीसरे जब दवाई देती है
सुमिरन करके दिया कर। फिर मैं तलवाड़ के पास
गया उसको भी मैंने ऐसे ही कहा। उसका वह दोनों
तरफ का अधरंग ठीक हो गया केवल उसकी टाँग में
मामूली लगाव रह गया। बारह साल वह इसके
बाद ज़िन्दा रहा। इसलिए यदि तुम औरतें चाहती
हो कि तुम्हारे घर में सुख रहे तो खाना बनाती हो
कुढ़ के मत बनाओ, खुश हो के खाना बनाओ,

मालिक का याद कर के खाना बनाओ। खाविन्दा को, बच्चों को, देवरों को खाना खिलाती हो, खुशी से खिलाओ। पति को खिलाती हो खिलाते वक्त ऐसी बातें मत करो जिससे उसका दिल दुःखे। यह मैं प्रवृत्तिमार्ग का राह बता रहा हूँ।

जिस किस्म के ख़्यालात तुम्हारे मन में आते हैं उसका फल तुम्हें मिलेगा। मेरी स्त्री स्वाभिमान वाली औरत थी। मैंने कुछ कहा या सास-ससुर या देवर ने कहा, घरों में झगड़े होते ही हैं तो बोलती नहीं थी बल्कि दिल में रखती थी व कुढ़ती थी। मैं उसको कहा करता था भागवती! तू दुःखी होगी और वही बात हुई। वह छः साल चारपाई पर पड़ी रही।

और सुनो! तुम्हारे छोटे बच्चे होते हैं जिनको पूरी अक़्ल नहीं होती उनको मारा मत करो। मैं यह क्यों कहता हूँ? मेरी ज़िन्दगी के तजुर्बे हैं। मेरा एक छोटा भाई था उसका नाम था वज़ीर चन्द। जब मेरी मां रोटी पकाने लगती बच्चे को मुझे दे

देती कि खिला इसको। कई बार उस बच्चे के कारण मुझे मार भी पड़ी। मेरे पिता ने कौए डराने के लिए घर में एक गुलेल रखी हुई थी। एक दिन मेरा पैर जो उसके ऊपर लगा बज़ीर चन्द नीचे पत्थर के ऊपर पड़ा और उसके ऊपर मैं पड़ा। मां आई उसने एक नहीं पूछा, दो नहीं पूछे पांच, छः थप्पड़ मुझे मार दिये पर लड़का फिर मेरी गोद में दे दिया कि जा खिला। मुझे वह म्यानी स्टेशन और वह रास्ता याद आता है जहाँ मैं लड़के को ले कर गया और मैंने कहा, हे परमात्मा! हे राम! इस लड़के के पीछे रोज़ मुझे मार पड़ती है, या मैं मर जाऊँ या यह मर जाये। वह लड़का तीन महीने के अन्दर मर गया। तुम छोटे बच्चों को मारती हो, उनको अपने क़सूर का कोई पता नहीं, उसके दिल से हाय निकलती है। वे बोल नहीं सकते, गाली भी आपको नहीं निकालेंगे मगर उनके दिल की हाय तुमको खा जायगी क्योंकि ख़्याल में बड़ी ताक़त है।

इसके अतिरिक्त जब तुम शादीशुदा हो जाती हो, सासें बहुओं को ताना मारती हैं और आजकल तो बहुएँ

सासों की खबर लेती हैं। जब ऐसी बातें होती हैं तो तुम यह उम्मीद करो कि तुम्हारे घर में शान्ति रहे यह ग़लत है। इसलिए होम पीस अर्थात् घर में शान्ति रखो। जिस घर में स्त्री-पुरुष की नहीं बनती वह घर तबाह हो जाता है, इसलिए वाणी ऐसी बोलो जो दूसरे को सुख देने वाली हो। महाभारत का युद्ध क्यों हुआ? इसका कारण द्रौपदी थी। जब पांडवों ने मकान बनाया उसके फ़र्श का रंग ऐसा था कि कौरवों ने समझा कि पानी है। उन्होंने जूते उतार लिये कि पानी में से गुज़र जायेंगे। द्रौपदी जो चौबारे पर बैठी थी वह क्या कहती है? अन्धों की औलाद अन्धी होती है, लिखा हुआ है महाभारत में। इसका बदला दुर्योधन ने लिया और सारा भारतवर्ष आपस में लड़ कर तबाह हो गया। कौन ज़िम्मेवार था? द्रौपदी। बड़े आदमियों के ख़्यालात जो इस वक्त मुल्क में हो रहे हैं देखना इनका क्या परिणाम होता है। ये बड़े-बड़े लीडर और मिनिस्टर, जब इनके अपने दिलों में विरोध है तो ये हमारा क्या भला करेंगे! सोचो मेरी बात को मैं क्या कह रहा हूँ। इसलिए

घर में कड़वा वचन कभी मत बोला करो। इसके सबूत में मैं तुम्हें दाता दयाल का शब्द सुनाता हूँ :—

मीठी वाणी बोलिये मुँह से, मन रहे निरमल शुद्ध शरीर।
कड़वा वचन कलीजा वेधे हिंसा की तलवार।
जिभ्या बांधे क्यों फिरते हो भाला छुरी कटार।
उर में साले सुन कर सुनने वाले दुःखी बनै दिलगीर।
मुँह तो बना भयानक बाँबी निकले विन्छू साँप।
डस डस खायें घाव करें गाढ़ा महा समझ यह पाप।
प्रानी कुछ तो सोच समझ मन अपने दे न पीर बेपीर।
क्यों मुख बना नरक की खानी दुर्गन्धो अस्थान।
जब बोले तब निकले सड़ाइँध समझ जो चतुर सुजान।
भाई इस करतब से जाय पड़ेगा नरक कुंड के तीर।

एक सज्जन ने सवाल किया है कि क्या सचमुच नर्क कुंड होता है ? उसने अपना नाम नहीं लिखा। क्यों नहीं लिखा ? यह उसको मालूम होगा। वह समझता था अगर मेरा नाम लिया गया तो मुझे दुनिया कुछ कहेगी इसलिए अपना नाम नहीं लिखा। उसने सवाल किया है वह जो भी चाहे सवाल करने का हक़ रखता है और जो कुछ मैंने अनुभव किया, मेरा भी हक़ है मैं वह ब्यान कर दूँ। मैं कहता हूँ

हाँ, नर्क होता है। इसका सबूत ? मैं कोई बात बिना सबूत के नहीं बोलता। एक सूबेदार हज़ारी सिंह है, पहिले सिपाही था। मुझ पर बड़ा विश्वास था। मेरे रूप ने उसकी बहुत-बहुत मदद की, यहाँ तक कि किसी मामले में कोर्ट मार्शल होने लगा उसने मुझको याद किया। मैंने कहा, कोर्ट मार्शल में तेरा कुछ नहीं होगा। उसने जा के मेजर साहिब को कहा, बाबा कहता है कुछ नहीं होगा। मेरे साहिब ने समझा यह पागल हो गया है। जिस दिन कोर्ट मार्शल हुआ वह जो कागज था, जिसके सहारे कोर्ट मार्शल होना था वही गुम हो गया। उसने एक बात बताई उसके चाचे को गुदा में फोड़ा था, उसने डाक्टर को घर में बुला कर ऑपरेशन करा दिया। ऑपरेशन के बाद उसका चाचा दो घण्टे बेहोश रहा। दो घण्टे के बाद उसको होश आया तो वह कहता है कि हज़ारी सिंह ! तूने मुझ पर बड़ा एहसान किया है। क्या एहसान किया ? उसने कहा कि दो आदमी आये, मुझ को हथेली पर रख कर ले उड़े। आगे बहुत सी रूहें पड़ी थीं, वहाँ मुझे भी रख दिया। एक औरत काले रंग की, उसकी बड़ी लम्बी जिह्वा, मुँह से आग

निकलती थी, वह इन रूहों को खाई जाती थी। मैंने, जो मुझे ले गये थे, उनको बोला, भई ! इसने खा तो जाना ही है, मुझे एक आदमी से मिला दो। कौन ? कि हज़ारी सिंह। हज़ारी सिंह तू आ गया, मैंने तुझ को बोला कि बाबे को बोलो कि मुझे बचा दे। फिर हज़ारी सिंह चला गया तो बाबा फ़कीर आ गया। बाबे फ़कीर ने मेरे को अपने हाथ में उठाया कहा कि अपने घर को जा और उस औरत से कहा कि तू इसको खा नहीं सकती। मैंने हज़ारी सिंह को पूछा कि क्या तू गया था ? नहीं। मैंने कहा कि जैसे तू नहीं गया बैसे मैं भी किसी के अन्तर नहीं जाता। सात वर्ष हो गये, इस सात वर्ष के अर्से में उसने मुझे एक पत्र भी नहीं लिखा क्योंकि सच्ची बात जो बता दी। नहीं समझ में आती है। हम लोगों को इन महात्माओं और गुरु लोगों ने (पाँच उँगलियाँ बराबर तो नहीं होतीं) और इन मज़हबों और पंथों ने मूर्ख और पागल बना कर लूटा है, वो जो उसके अन्तर दृश्य आया वह उसके लिए नर्क था और जो मैं गया, उसको बचाया वे दोनों उसके बिचार थे। मैं नहीं

कहता कि आसमान के ऊपर कोई स्वर्ग या नर्क कि नहीं, मैं अपने जीवन का अनुभव आपके समक्ष पेश करता हूँ। तुम रात को सो जाते हो, स्वप्न में किसी की बाजू कटती है, कोई दरिया में डूबता है, किसी को साँप लड़ता है। मैंने एक औरत देखी है जिसको प्रतिदिन स्वप्न में साँप लड़ता था। जब प्रात: उठती थी, जहाँ साँप लड़ता था वहाँ छाला होता था जो चौबीस घण्टे में गुम हो जाता था। वह लम्बी जीभ वाली औरत और साँप यदि कोई चीज़ है तो मन का ख़्याल है। बुरे कर्मों का परिणाम जिससे डर लगे व शर्म आए वह पाप और नर्क है और जिससे खुशी मिले वह स्वर्ग है।

'अहिंसा परमो धर्म': हम हिन्दुओं का असूल है। दुनिया ने यह समझ रखा है कि जानवरों को न मारो ये जैनी जो मुंह पर पट्टी बाँधते हैं, वह समय चला गया, अब ज़माना बदल गया। अब फ़सलों को कीड़े लगते हैं, यदि डी. डी. टी. नहीं छिड़कोगे तो रोटियाँ कहाँ से खाओगे। मुझे बताओ? 'अहिंसा परमो धर्म:' प्रकृति में नहीं है। धूप चढ़ती

है, कितने ही कोड़े मर जाते हैं, वर्षा होती है कितने ही मरते हैं तथा कितने ही नये पैदा हो जाते हैं। मैं जो कुछ समझता हूँ वह कहता हूँ कि अपने आप को दुःखी करना हिंसा है, अपने आप को सुखी रखना, बेफ़िक्र रहना. वेग़म रहना, वेचिन्त रहना ही अहिंसा है। जो स्वयं ख़ुश, वेफ़िक्र और वेग़म रहेगा उसकी ज़ात से दूसरों को कोई कष्ट नहीं होगा। जो घर में हर समय रोता रहता है वह नर्की जीव है तथा जो ख़ुश रहता है वह अच्छा आदमी है। यही दाता दयाल एक शब्द में कहते हैं। सन्तपना है क्या? यह नहीं कि तुम्हारे अन्तर शब्द खुला और तुमने वीण सुनी, यह तो साधन है। सन्तमत के आने से क्या मिलना चाहिए? यह जो दाता दयाल जी लिखते हैं:—

जिसके मन में नहीं चिन्ता व्यापे, वही दास फ़कीर।
अभय रहे चित्त गुरु पद राखे, धीर बीर गम्भीर।
शान्त भाव, व्यवहार परमारथ, कभी न होबे दिलगीर।
अपनी पीड़ न उर में साले, लखे पराई पीर।
पर की पीड़ न जिसे सतावे, सो अधरम बेपीर।

अब देखो! सासें बहुओं को ताने मारती हैं,

बहुएँ सासों को ताने मारती हैं ये बेपीर हैं अर्थात् बेमुरशद हैं इनको गुरु नहीं मिला।

अपना रूप सम्भाले पल-पल काट मोह ज़ंजीर।
यह फ़कीर है गुरु को प्यारा, महावीर चित्तधीर।
चाह गई चिन्ता सब भागी, आया भवनिधि तीर।
हंस रूप धर त्याग नीर को, गह लिया ज्ञान का क्षीर।
राधास्वामी गुरु का सच्चा बालक पहर विराग का चीर।

सन्तों के पास जाते हैं, किस लिए ? अभयपद के लिए, बेचिन्तपने, बेफ़िक्री और बेग़मे के लिए। यह है सन्तों के मार्ग का मंज़िले मक़सूद। 'निर्भय, निर्वैर, अकाल मूरत, अयोनि, सभंग' यह गुरु नानक साहिब की वाणी है। सब सन्तों का उद्देश्य एक ही है परन्तु समझने वाले नहीं हैं। यदि आज, जितना यह सन्तमत फैला हुआ है यह अगर सच्चाई से काम ले तो लोगों की ज़िन्दगियाँ बदल जायँ। मेरे सत्संग में पति और पत्नियों के जिनके आपस में सम्बन्ध बीस-बीस बरस से ठीक नहीं थे वे ठीक हो गये। भाई-भाई की दुश्मनी थी वह भी ठीक हो गई क्योंकि उनको सच्ची बात बता दी। बेफ़िक्री और बेग़मी मंज़िले मक़सूद है और वह तब आयेगी

जब तुम्हारे प्रवृत्तिमार्ग और निवृत्तिमार्ग दोनों ह
ठीक होंगे। जब तक प्रवृत्तिमार्ग ठीक नहीं :—

जिसको जीवत मुक्त न होवे साधो मरे मुक्ति की आसा हो।

जो ज़िन्दगी में ही मुक्त नहीं है तो मरने के बाद मुक्ति कहाँ से मिलेगी उसको भई! तो आज मैं प्रवृत्तिमार्ग का ज़िक्र कर रहा था, प्रवृत्तिमार्ग में क्या है? मायादेश है यह। मायादेश में क्या चाहिए? वेदमार्ग 'शिवसंकल्पमस्तु' कल्याणकारी अच्छे ख़्यालात रखो। मगर ये रखोगे कब? जब तुम्हारी जड़ जो है, जो बुनियाद है तुम्हारे पैदा होने की वह नेक है। यदि वही नेक नहीं है तो तुम क्या करोगे? फिर ऐसे आदमियों को पैबन्द लगाने चाहिएँ। यह गुरु धारण करना, सत्संग करना क्या है? पैबन्द लगाना है। जिस तरह एक खट्टे को मिट्ठे की टहनी लगा दो और उसको जोड़ दो है वह खट्टा, मिट्ठे की उससे लग गई पैबन्द, वह सन्तरा बन जायेगा परन्तु तुख़्म की तासीर फिर भी नहीं जायेगी, यह बता देता हूँ आपको। परन्तु पैबन्द लगाने से, सत्संग से, अच्छे पुरुषों की संगत से आदमी की ज़िन्दगी में तबदीली आ सकती है।

इसलिए यह गुरुमत है। गुरुमत तुमने समझा नहीं तुमने यह समझा हुआ है गुरु महाराज आ गये कपड़े दे दो, मिठाई खिलादो, उनके नाम का ढिंढोरा पिटा दो—वह अमरीका जाता है जी, हमारा गुरु बड़ा क़ाबिल है, फलाँ जगह जाता है, यह सब बकवास है, झूठ और फ़रेब है। कोई बाहर का गुरु किसी को मरते वक्त लेने नहीं जाता। जो जाता है वह उसका अपना ख़्याल जाता है। यदि मैंने वही काम करना होता [redacted] और गुरु कहते हैं तो मैं यह नई दुकान नहीं खोलता। हम लोगों को धोखा दिया गया है, नाम ले जाओ अन्त समय तुमको सत्तगुरु ले जायेगा, जो मर्ज़ी चाहे करते रहो अब कई ऐसे फ़िरके हैं किसी की लड़की हो, किसी की बहिन हो, कहते हैं खूब मौज़ करो, शराब पीओ, मांस खाओ, जो मर्ज़ी चाहे करते रहो। दुनिया यह चाहती है इसलिए उनको सहारा मिल गया व पन्थ ज़बर्दस्त बन गया और सच्चे आदमी के नज़दीक कोई जाता नहीं, कोई आता नहीं, कोई पूछता नहीं तू है कौन।

तो प्रवृत्तिमार्ग क्या है ? वेदमार्ग 'शिवसंकल्पमस्तु'। इसके लिए तरीक़े हैं, सब के लिए एक रास्ता नहीं है। बाज वक्त घर में शान्ति रखने के लिए तुमको किसी के साथ सख़्ती भी करनी पड़ती है जो शराफ़त से बात को न समझे। आदमी को मारना महापाप है परन्तु जब दुश्मन हमला करता है तो उसको मारना पुण्य है क्योंकि यदि तुम उनको रोकोगे नहीं तो वे हज़ारों आदमियों को मार डालेंगे और अपना क़ाबू कर लेंगे। इस वास्ते जो लड़ाई के मैदान में मारे जाते हैं, कहते हैं कि वे स्वर्ग को जाते हैं और यह बिलकुल ठीक बात है।

तो आज मैंने प्रवृत्तिमार्ग का ज़िक्र किया, वह क्या है ? अपने ख़्याल को ठीक करो और वह तब ठीक रह सकता है जब तुमको सत्संग प्राप्त है। सत्संग का भी उनको लाभ पहुँचता है जो विश्वास करते हैं। यदि ख़ुदा मियाँ भी तुमको उपदेश दे और तुम्हारा विश्वास नहीं है तो तुमको कोई लाभ नहीं होगा। जितना खेल है सब तुम्हारे विश्वास का है। तुम विश्वास करो जहाँ भी तुम्हारी मर्ज़ी हो, मैं नहीं कहता कि मुझ

पर विश्वास करो परन्तु दूसरों के विश्वास को धक्का मत पहुँचाओ। फ़र्ज़ करो एक आदमी बाबा चरणसिंह का चेला है और वह दूसरे गुरुओं को कहता है ये ग़लत हैं, हमारा बाबा चरणसिंह या बाबा फ़कीर ठीक है बाकी सब ग़लत हैं, ऐसा सोचना एक महापाप है। क्यों ? न बाबा चरणसिंह ने कुछ तुमको देना है न मैंने देना है। हमने बात कहनी है तुमको, जिसने समझ लिया उसका बेड़ा पार है, जिसने नहीं समझा उसका बेड़ा पार नहीं। तो सबसे बड़ी चीज़ प्रवृत्तिमार्ग में क्या है ? हमेशा आशावादी रहो, बुरी बात मत सोचो। यह यक़ीन करो कि जो कुछ होता है यह तुम्हारे वास्ते अच्छा होता है। मैं अपनी बाबत जानता हूँ, मेरी ज़िन्दगी बड़ी ईमानदारी की ज़िन्दगी थी। मेरे पास कोई पैसा नहीं था, $87\frac{1}{2}$ रुपये में क्या कर सकता था। केवल प्रॉविडेण्ट फण्ड मुझको मिला या गेच्युटी का ग्यारह-बारह हज़ार रुपया मिला या विदेश का आठ-नौ हज़ार रुपया जमा किया हुआ था वह मिला। मेरे दो लड़के और चार लड़कियाँ

थीं। मैं दाता के पास जा के रोया, महाराज ! सच्चाई और ईमानदारी की ज़िन्दगी गुज़ारी, इन बच्चों को कौन पढ़ायेगा, कौन शादियाँ करेगा ? दाता हँसे कहने लगे तुझको यक़ीन नहीं मालिक पर ? यक़ीन है। जो कुछ वह करेगा तुम्हारे वास्ते अच्छा करेगा। शादीशुदा लड़की मर गई, जमाई रोज़ ताने मारता था साईकल नहीं दिया, यह नहीं दिया, वह नहीं दिया। दो कुँआरी लड़कियाँ और एक लड़का मर गया, मेरा खून बढ़ गया। दाता ने देखो मेरे पर कितना रहम किया, वह जो कुछ हुआ अच्छा हुआ।

मैं आप लोगों को कुछ नहीं कहता अपना कर्म भोगता हूँ, न मैंने दाता को राम का अवतार माना हुआ होता न मैं यह काम करता। अब तुम लोग हो तुम्हारी शादी हो जाती है, तुम और पति आपस में बंध जाते हो, वह उसके हुक्म में, वह उसके हुक्म में। इसी तरह मैं दाता दयाल के साथ बंध गया। मेरा अपना विश्वास था कि वह मालिक के अवतार थे। वह थे या नहीं थे इसका मुझे

पता नहीं मगर मैंने माना था। क्योंकि उन्होंने मुझे कहा फ़कीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना इसीलिए मैं काम करता हूँ। यह ठीक है मैं मन्दिर के लिए पैसा ले जाता हूं परन्तु मैं एक पैसा नहीं खाता। आप लोगों के पास जो रोटी खाई है, मन्दिर में जाकर इसके पैसे दे दूंगा। तराने मैंने रोटी खाई, 100/-रु. अपने पास से सेवाराम को दिया। परन्तु यदि आपसे कहूं कि आपने मुझे रोटी खिलाई है यह रुपया ले लो, यह बुरी बात है। इसलिए इसका मैंने यही इलाज़ सोचा कि मन्दिर में चार पैसे दे दूंगा ताकि मुझ पर तुम्हारे खाने का कोई बोझ न पड़े।

तो आज आप आये हैं। मैं आपको इतनी बात कह देता हूं कि तुम पति-पत्नी हो, प्रेम से रहो। यदि प्रेम नहीं है तो जो उसका कष्ट होगा वह तुमको भोगना पड़ेगा। शास्त्र कहते हैं पता नहीं झूठ है या सत्य है मैंने पुराण नहीं पढ़े। जो पत्नी स्वप्न में भी अपने पति के विरुद्ध सोचती है वह दूसरे जन्म में विधवा हो जाती है। यह पुराण में लिखा हुआ है तथा मेरी बुद्धि मानती है

कि विचार में शक्ति है। क्या शक्ति नहीं है ? मैंने आपको प्रमाण तो दे दिया लोग अमरीका में मुझे बुला लेते हैं तथा मेरा रूप उनकी सहायता कर जाता है। अब मुन्शी लाल यहाँ जो टप्पल का रहने वाला है उससे पूछ लो कि उसके दो लड़कों के साथ क्या हुआ। मैं तो गया नहीं यह उनका विश्वास था। तो सदैव बिश्वास रखो। मैं नहीं कहता मुझ पर रखो, जहाँ तुम्हारा दिल करता है वहाँ रखो परन्तु एक पर रखो, यह आपको बता देता हूँ। जो औरत एक की हो कर रहती है वह बूढ़ी हो जायगी, अब जिस प्रकार तुम्हारी माँ है, जो आता है नानी, दादी, फूफी इत्यादि कह कर उसको इज़्ज़त करता है और एक औरत है उसने एक को छोड़ा, दूसरे को किया, दूसरे को छोड़ा तीसरा किया, उसकी क्या इज़्ज़त है ? कोई इज़्ज़त नहीं है :—

'एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।

ये मेरे जीवन के अनुभव हैं। तुम अपने मन में सच्चे बन कर पुकार किया करो। यह भूपसिंह

बठा है, इससे जीवन में कोई ग़लती हुई, यह आत्महत्या करना चाहता था। बारह वर्ष मेरे पीछे फिरता रहा, मैंने परवाह नहीं की कि कौन है यह। जब कुम्भ में मैं यहाँ आया तो यह टेपरिकार्डर ले के आया तथा रीलें इत्यादि सारा सामान ले आया तो मेरे मन में विचार आया कि इसने इतना रुपया खर्च किया है, यह कौन है। इससे पूछा, तुम कौन हो ? इसने कहा मेरा नाम यह है, मैं ऊंटासानी का रहने वाला हूँ। मैं आत्महत्या करने लगा था। पहले कुतुबमीनार से छाल मारने लगा तो मेरे मन में विचार आया कि यदि मेरी हड्डी-पसली टूट गई और जान न निकली तो फिर मुसीबत में आऊंगा। फिर मैने सोचा कि यमुना में डूब मरूँ लेकिन मैं तैरना जानता था, मैंने कहा मरना बड़ा कठिन होता है। फिर इसके मन ने कहा तू लाईनमैन है इसलिए बिजली का हाथ लगा कर मर जा। यह अपने कमरे में बिजली को हाथ लगाने लगा, यह कहता है कि वहाँ मैं इसके अन्तर प्रकट हुआ तो मैंने कहा- भूपसिंह ! जाग, जाग, जाग। यह कहता है कि क्या करूंगा जाग कर ? तेरा समय आ गया और आप

यह कहते हुए आकाश को उड़ गये तथा ऊपर तारा बन गया :—

'एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाय ।'

अब मैं तो गया नहीं, मुझे पता नहीं । इसीलिए इस आयु में आप सत्संगियों को अपना गुरु मानता हूँ क्योंकि आप लोगों से मुझे यह भेद तथा ज्ञान प्राप्त हुआ । अगर आपको इस ज्ञान की आवश्यकता नहीं लेकिन संसार में तो सुखी रहने की आवश्यकता है । इसके लिए मैंने आपको प्रवृत्तिमार्ग का तरीका बता दिया कि सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा करो, जीवन विषय-विकार के लिए नहीं है । कम से कम यदि तुम्हारी युवावस्था गई, बुढ़ापा आ गया और तुम चालीस-पैंतालीस के हो गये, तुम्हारे छः-छः बच्चे हैं फिर भी तुम विषय कमाते रहते हो तो तुम ग़लती खाते हो । शरीर निर्बल हो जायेगा, तरह-तरह की बीमारियाँ घेर लेंगी, मैं बात सच्ची कहता हूँ ।

तो आज मैंने आपको प्रवृत्तिमार्ग का सत्संग दे दिया, आप समझ गये मेरी बात को ! दुनिया

में रहो, नीयत साफ रखो, हेराफेरी मत करो। मैं आपको अपने घर का अनुभव बताता हूँ कि मेरा पिता सिपाही था, हम ग़रीब थे, दो भाई थे, मेरा बाप और मेरा ताया, इकट्ठे रहते थे। मैं छोटा होता था कभी रोटी खाने बैठता, चौके में मां होती तो वह दो बादाम या थोड़ा सा घी मेरी सब्जी-दाल में अधिक डाल देती तथा कहती कि किसी को मत बताना। ऐसे ही मेरी ताई तथा मौसी भी करती होंगी, परिणाम घर में कुछ नहीं था :—

न खांदे खान, न मंजे वान।

तुम बिजनैसमैन हो, पार्टनर हो। पार्टनर बन कर यदि तुम एक सिगरेट भी पीते हो और अपने नाम नहीं लिखते तो तुमको घाटा न पड़ेगा तो और क्या होगा! ज़रूर पडेगा, कोई रोक नहीं सकता। इसका प्रमाण मैं आपको देता हूँ। सुदामा तथा कृष्ण दोनों गुरुकुल में पढ़ते थे। जंगल में लकड़ियाँ काटने को गये तो गुरु की स्त्री ने सुदामा को भुने हुए चने दे दिये कि बच्चा! तुमको भूख लगे तो बाँट के खा लेना। जंगल में रात पड़ गई, एक टाहनी

पर कृष्ण बैठा था तथा दूसरी पर सुदामा बैठा हुआ था। सुदामा को भूख लगी तो वह चने चबाने लगा। कृष्ण ने पूछा सुदामा! क्या खाता है? उसने कहा सर्दी लगती है, दाँत बजते हैं। सारा जीवन दाँत ही बजते रहे। वह तो उसकी पत्नी पतिव्रता थी इसलिए उनका फिर सुधार हो गया परन्तु सुदामा ने तो पाप किया।

ऐसे ही तुम दुकानदार हो, बिजनैस मेन हो, पार्टनर हो, घरों में रहते हो तो सच्चाई और सफाई से निर्वाह करो। तुमने यदि चार पैसे फ़र्ज़ करो अपने लिए खर्च किये हैं तो अपने नाम लिखो, वरना घाटा क्यों पड़े। सेठ दुर्गादास था, मैंने मन्दिर बनाया था। मैंने उसको बोला कि अपने जामाता के साथ ठेका कर ले। ये-ये शर्तें हैं कि सीमेंट या लोहा ब्लैक में नहीं बेचना, यदि मज़दूर की पौनी दिहाड़ी लगी है तो उसको पुरी दिहाड़ी दो, किसी का पैसा नहीं रखना। यदि तुमको हानि हो जाये तो मैं ज़िम्मेवार हूँ। दुर्गादास ने 16 वर्ष ठेका किया लेकिन कभी हानि नहीं हुई। उसने मन्दिर में बाईस हज़ार

रुपया दिया जिससे मैंने ज़मीन खरीदी तथा शुरू-शुरू में मकान बनाया। समझ गये मेरी बात को !

तो मैंने आपको गीता नहीं पढ़ाई, आप समझते हो न ! कोल्ड वार नहीं रखनी चाहिए। तुम भाई-भाई इकट्ठे होते हो दिलों में कुछ और है, ऊपर से भाई-भाई करते हैं। यही हाल कौरवों तथा पाण्डवों का हुआ। जब ये स्कूल में पढ़ते थे तो खेलते हुए द्वेष रखते थे परन्तु गुरु और दादा पास खड़े होते थे इसलिए वे चुप कर जाते थे। परन्तु जब जवान हो गये फिर देख लो ! सारा भारतवर्ष सत्यानाश हो गया। इसलिए घरों में कोल्ड वार नहीं रखनी चाहिए। आज़ाद विचार और शुभ ख़्यालात रखो परन्तु यह मैंने कह तो दिया, क्या यह क्रियात्मक रूप में आना सम्भव है ? यह एक प्रश्न है जो मेरे मन में पैदा होता है। इस समय की ऐसी मानसिक अवस्था (Mentality) है, विशेष कर वर्तमान शिक्षा ऐसी है कि यह किसी काम की नहीं। मैंने बड़े-२ देखे हैं एम. एससी. डबल एम. ए.-एम. ए. लड़कियाँ हैं, शादियाँ होती हैं, पतियों से वहीं बनती दूसरे दिन तलाक़ ले

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

लेती हैं, बड़े-२ डाक्टर, बड़े-२ [illegible] होती हैं।

यह तो मेरे ज़िम्मे एक ड्यूटी थी, मैं ड्यूटी को निभा रहा हूँ। मुझे नहीं पता कि मेरे काम का क्या प्रभाव होगा, मैं नहीं जानता परन्तु जो व्यक्ति इस विचार से मेरे पास आते हैं कि बाबा कथा करता है, शायद स्वयँ अपने जीवन को बना लें तो बना लें। दोस्तो ! मैं एक बड़ी ज़िम्मेवारी को अनुभव करता हूँ। मैं अपनी आत्मा को सच्चा रखना चाहता हूँ, लोग मुझ पर विश्वास करते हैं मैं तुम लोगों को धोखा देना नहीं चाहता, मेरे पास शुभ भावना और शुभ ज्ञान के सिवाय और कुछ नहीं।

आपको एक और उदाहरण देता हूँ फिर सत्संग बन्द कर देता हूँ। मैं बसरे बग़दाद में था, मैंने वीणें सुनीं, प्रकाश देखे, मेरे दिल में बड़ा घमण्ड था कि मैंने सब कुछ पा लिया। जब मैं लाहौर आया दाता दयाल ने मुझे देख कर कहा चलो धूप में तुमको देखूँ कि तुमने क्या कमाई की है। मैं धूप में गया, वह मुझे देखते रहे, कहते हैं जोगी हो गया, सिद्धि शक्ति हो गई परन्तु तू अभी सन्त नहीं हुआ। वह मेरा

जितना घमण्ड था सारा टूट गया। मुझ को दु:
देख कर दाता ने कहा, कल तुम्हारी परीक्षा लूंगा।
मैं सोचता था कि मुझ से पूछेंगे कि सुन्न में क्या देखा,
महासुन्न में क्या देखा इत्यादि। इसका जबाब देने को
मैं तैयार था। प्रात: उठे लंगर का काम मैं ही किया
करता था, मैंने सब्जियों को चोरा, देगचा रखा,
नीचे आग जलाई, दो चार सत्संगी थे दाता ने कहा
सब्जी मैं डालूंगा, ठहरो। वह आकर बैठ गये
और आते ही उन्होंने एक मिनट में मुझे पचास
हुक्म दिये। हल्दी लाओ, मिर्च लाओ, नमक लाओ,
मसाला लाओ, ऐसी-ऐसी बातें कीं। वह हल्दी कहें,
मैं हल्दी की ओर जाऊँ दो हुक्म और मिल जायें,
वो हल्दी भी छूट जाये, दूसरी चीज़ भी छूट जाये।
आखिर देगचे में घी पड़ा हुआ था, उसको आग लग
गई। उन्होंने सब्जी डाली और ढक्कन दे
कर चले गये। मैं परीक्षा का इन्तज़ार करता था
कि मेरे पास से क्या परीक्षा लेंगे। शाम हुई, सेवा
कर रहा था तो मैंने कहा कि महाराज! मेरी
परीक्षा नहीं ली? उन्होंने कहा तेरी परीक्षा ली और
तू फेल हो गया। मैंने पूछा कि क्या परीक्षा ली?

मैंने कहा कि ये चीज़ें दो, तुमने कोई चीज़ न दी। मैंने कहा, जी! मैं घबरा गया, आपने इत जल्दी कहा। मुझे कहते हैं, मूर्ख! न घबराना ही फ़कीरी है। फिर उन्होंने गुरु नानक साहिब का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा गुरु नानक साहिब फ़कीर थे, पंजा साहिब में पत्थर को रोका, उसने तो किसी कारण रुकना ही था, यह तो जीवों का अपना विश्वास है कि गुरु नानक साहिब ने पत्थर को रोक दिया परन्तु उनका हौसला यह था कि वह उठ कर भागे नहीं, उसको पंजा साहिब बोलते हैं। तुम मेरा मतलब समझते हो कि नहीं! तो मन को सम्भाला करो, खुश रहा करो, चिन्ता मत किया करो। आप समझते हैं मेरी बात को! मैंने आपके चरणों में बहुत कुछ कह दिया जो मेरी समझ में आया। मैंने गीता का पाठ या रामायण का पाठ नहीं पढ़ाया, जो मेरे क्रियात्मक, प्रतिदिन के जीवन के साथ गुज़री मैंने वह बता दिया। अपना जीवन क्रियात्मक बनाओ, बस। घरों में शान्ति रखो, अच्छी सन्तान पैदा करो, सन्तान को प्रेम से रखो, तुम्हारे बूढ़े सास-ससुर हैं उनकी सेवा करो, पति की आज्ञा

में रहो और पतियों को यह कहा जाता है, देखो न पति को कहा जाता है कि एक बार नाम ले फिर नाम न लेना। इसका क्या मतलब ? पति अपनी स्त्री की इज़्ज़त रखे और स्त्री अपने पति की इज़्ज़त रखे। बात समझ में आती है कि नहीं आती है ? मगर अब कौन इज़्ज़त करता है ! औरतें मुँहज़ोर हों तो पतियों को पचास सुनाती हैं या पति मुँहज़ोर हों तो पचास बीबियों को सुनाते हैं।

गुरु न तुमसे अलग है न पहले था। तुम गुरु में रहते हो जैसे मछली पानी में रहती है। भ्रम है इसलिए ढूँढ़ते फिरते हो। प्रार्थना अपने दिल में तथा अपने शब्दों में किया करो चाहे भगवान् को तू करके बुलाओ। जब भी कोई बुलाता है वह तू ही कहता है न ! आज केवल गृहस्थ का झगड़ा ही बताया, कल निवृत्तिमार्ग पर बोल दिया, आज प्रवृत्तिमार्ग पर बोल दिया, कल क्या बोलूंगा मुझे पता नहीं। कल इससे कुछ और न्यारा ही होगा।

—o○o—

सत्संग परम सन्त मानव दयाल जी महाराज

[गतांक से आगे]

कबीर साहिब का शब्द है ;—

अरे मन धीरज काहे न धरै ।
सुभ असुभ करम पूरबले, रती घटै न बढ़ै ।।
होनहार होवै पुनि सोई, चिन्ता काहे करै ।
पसु पंछी जिव कीट पतंगा, सब की सुद्ध करै ।।
गर्भ बास में खबर लेतु है, बाहर क्यों बिसरै ।
मात पिता सुत सम्पत्ति दारा, मोह के ज्वाल जरै ।।
मन तू हंसन से साहिब के, भटकत काहे फिरै ।
सतगुरु छोड़ और को ध्यावै, कारज इक न सरै ।।
साधुन सेवा कर मन मेरे, कोटिन व्याधि हरै ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज में जीव तरै ।।

कबीर साहिब कहते हैं कि पूर्व जन्म के शुभ व अशुभ कर्मों का फल मिलता है तो उससे घबराने की ज़रुरत नहीं है। कर्मसिद्धान्त बड़ी भारी चीज़ है। कर्म को लोग समझते नहीं हैं, यह नहीं ! कि सब

कुछ जो हो रहा है वह आपके पूर्व जन्म के कर्मों से हो रहा है। ऐसा सोचना भी ग़लत बात होगी। सब कुछ पूर्व जन्म से हो रहा है, अगर ऐसा ही हो फिर तो कोई काम ही नहीं करो ! घर पर बैठो, सोते रहो खाना मुँह में आ जायेगा ! कर्मसिद्धान्त को सन्तमत वालों ने भी नहीं समझा इसलिए वह अकर्मण्य हो जाते हैं कि सब मालिक कर रहा है। नहीं, नहीं, यह ग़लत है पूर्वजन्म के कर्मों का तो केवल एक अंश होता है, ज़ितने कर्म हम करते हैं उनमें से एक थोड़ा सा हिस्सा होता है जो पिछले जन्मों का होता है जिसको हम प्रारब्ध कर्म कहते हैं। सारा प्रारब्ध कर्म नहीं होता।

कर्म को समझने के लिए बहुत ज्ञान चाहिए, कर्म है, अकर्म है, विकर्म है, कई प्रकार के कर्म हैं, नित्यकर्म होते हैं। इस व्याख्या में न जाकर मैं यह कहना चाहता हूँ कि कर्म तीन प्रकार के हैं जो हम करते हैं। शरीर से, वचन से अर्थात् बोलने से और मन से और इन तीनों प्रकार के कर्मों का नतीज़ा हमें मिलेगा। वचन जो बोलोगे उसका फल मिलेगा और बड़ी ध्यान देने वाली बात यह है कि जो विचार

भी आप किसी के बारे में करोगे वह विचार कर्म को उदय करता है और जो आपने विचार छोड़ा, अच्छा या बुरा उसका नतीजा ज़रूर आपको मिलेगा बल्कि वह तो ऐसे आकर डसेगा जैसे कहते हैं कि साँपनी उस आदमी को आकर के डस जाती है जिसने साँप को मारा हो। इसलिए विचारों की शुद्धता बहुत-बहुत ज़रूरी है।

अब आप एक रात बैठकर देखें और दिनभर के जो कर्म किये हैं अच्छे या बुरे सारे अगर लिख सको, रिकार्ड कर लो और जितने विचार छोड़े हैं, पता नहीं कितने विचार अच्छे या बुरे छोड़े हैं, एक दिन के कर्मों को इकठ्ठा करो आप, तो वे कितने हो जायेंगे? क्या एक दिन में उनका फल भोग सकते हो? कभी नहीं। एक दिन के कर्मों के लिए भी आपको साल चाहिए। सभी कर्म जो हम करते हैं उनका फल हमें इस जन्म में मिल ही नहीं सकता, असम्भव बात है। दस साल में जो आपने कर्म किये हैं उनके भोगने के लिए हज़ारों साल चाहिएँ, सभी कर्मों का फल इसी जन्म में नहीं मिलता व मिल नहीं सकता इसलिए

पुनर्जन्म होता है। पुनर्जन्म तब नहीं होता जब सत्तगुरु के कहने पर चलोगे, फिर तो सब कर्म कट जायेंगे।

इन तीन प्रकार के कर्मों में फिर आगे तीन प्रकार के कर्म आते हैं। एक तो होते हैं संचित कर्म जिनको इकठ्ठे किये गये कर्म कहते हैं अर्थात् जो जमा पड़े हैं, जिनका हमारे इस जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि कितने ही जन्म लिये हैं हज़ारों, लाखों आपने, उन पूर्व जन्मों के सारे कर्म एक जन्म में कैसे भोग सकते हैं। वे संचित कर्म कैसे हैं ? जैसे आजकल बैंक में अगर आप दस साल के लिए दस हज़ार रुपये जमा करो तो कहते हैं कि दस साल के बाद आपको हम बीस हज़ार रुपये देंगे लेकिन यह भी कहते हैं कि बीच में निकाल नहीं सकते हो उनको, चैक भी नहीं काट सकते। यह संचित कर्म रूपी जो पुराना हिसाब-किताब बैंक में पड़ा है जिसके लिए सम्भव है कि आप को सौ बार या हज़ार बार फिर जन्म लेना पड़ेगा इसकी कोई चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं

है क्योंकि इससे बच सकते हो। जब सत्तगुरु से मिलकर ज्ञान हो जाता है और सत्तलोक चले जाते हो तो पिछले जमा हुए हुए सब कर्मों का लेखा मिटकर साफ़ हो जाता है और उसके लिए आपको फिर नहीं आना पड़ेगा। परन्तु जो प्रारब्ध कर्म हैं, जो कबीर साहिब कह रहे हैं :—

सुभ और असुभ करम पूरबले, रती घटै न बढ़ै।

यह प्रारब्ध कर्म केवल एक हिस्सा मात्र होता है। इनकी भी चिन्ता नहीं करने की ज़रूरत। शादी होगी आपकी प्रारब्ध कर्म से, आपको गुरु मिलेगा तो प्रारब्ध कर्म से मिलेगा। आप क्यों इस मानवता मन्दिर में आये? आपके पूर्व जन्म के सम्बन्ध यहीं पर हैं। प्रारब्ध कर्म पर किसी का ज़ोर नहीं, अच्छे या बुरे सब को भोगना पड़ेगा।

प्रारब्ध कर्म की क्या निशानी है? प्रारब्ध कर्म की निशानी यह है कि वह फल आपको मिलता है जिसके लिए आपने इस जन्म में कुछ किया ही नहीं। अरे! धन्य हो आप जो महाराज जी के चरणों

मैं आये, प्रारब्ध कर्म थे तो ये आपको ले आये। इस जन्म में किये हुए कर्मों से बड़े-बड़े लोग हैं बी. ए., एम. ए., पीएच. डी. हज़ारों थे, महाराज जी के पास क्यों नहीं आये ? आखिरी सत्संग में मुझे कहते थे "मैं तुम्हें बुलाने तो नहीं गया था !" कैसे प्यार से कहते थे, बुलाने तो नहीं गया था ! "1963 में तू मेरे पास आया"। मैंने कहा महाराज जी ! चार साल पहले मुझे आपके दर्शन हुए थे यद्यपि मैंने आपको देखा नहीं था, तो ये क्या प्रारब्ध कर्म थे पूर्व जन्म के ? कहने लगे हाँ ! ये पूर्व जन्म के कर्म थे। इसमें किसी का वश नहीं चलता, उनको खुशी से भोगना होता है। जिसका आपने कुछ किया नहीं और आप पर आपत्ति आ गई, फिर घबराओ नहीं ! यह कटा कर्म !! इससे आप आगे बढ़ेंगे। शुभ और अशुभ जो प्रारब्ध के कर्म हैं उनसे घबराना नहीं चाहिए क्योंकि वे तो होंगे, शुभ भी होंगे। आप बैठे हैं, एक दम आपकी लाटरी आ गई, आपने कुछ किया नहीं और कुछ काम ऐसे भी होते हैं कि आपने बहुत कोशिश की कि यह हो जाये मगर वह होता नहीं, आगे से आगे

बढ़ता जाता है यह प्रारब्ध कर्म के कारण है।

तीसरे हैं क्रियमाण कर्म अर्थात् नये कर्म जो हम अपने संकल्प से कर रहे हैं। आप ऊपर बैठे हुए हो, एकदम आप कहते हो मैं छलांग लगाता हूँ, अकर्म है यह। आपको महाराज जो ने काम दिया कि यहाँ बैठ कर काम करो, आप कहते हैं मैं यहाँ नहीं काम करता, मैं जाता हूँ, यह प्रारब्ध कर्म नहीं है। गुरु की आज्ञा का पालन न करना यह क्रियमाण कर्म है, आप स्वयं कर रहे थे, स्वयं कूए में जा रहें हो आप उसके फल से नहीं बच सकते परन्तु जब आपने गुरु की आज्ञा का पालन कर लिया तो आपके नये कर्म भी कट जाते हैं।

जो सन्त है, जो प्रबुद्ध है, जिसे सत्तगुरु का ज्ञान हो चुका है वह भी कर्म करता है, आप भी कर्म करते हो, परन्तु वह जो कर्म करता है समझना चाहिए कि उसको कर्म नहीं बाँधते हैं क्योंकि वह साक्षी समान रूप से कर्म करवाता है। तो इसलिए सत्तगुरु की कृपा से यह कर्म जो आगे कर रहे हो ये भी कट जाते हैं, पिछले भी जमा किये हुए कट

जाते हैं परन्तु प्रारब्ध भोगने पड़ते हैं। सन्त अगर चाहे तो प्रारब्ध को काट सकता है परन्तु वह काटे तो उसको वापिस आना पड़ता है इसलिए सन्त प्रारब्ध कर्म को भोग कर जाते हैं, यह है इसका मतलब :—

पसु पंछी जिव कीट पतंगा, सब की सुद्ध करै।
गर्भ बास में खबर लेतु है, बाहर क्यों बिसरै ॥

वह परमतत्त्व, परमाधार, मालिक तो सब की रक्षा करता है, पालन करने वाली शक्ति विष्णु कहलाती है। पशु-पक्षी क्योंकि ये क्रियमाण कर्म नहीं करते इनका एक नियम है, नियम के अनुसार चल रहे हैं। गर्भ में बच्चे को जो कुछ मिलता है वह प्रारब्ध कर्म से है। वह मालिक जो यह सब कुछ कर रहा है और आदमी उसको भूल जाता हैं तब उसे दु:ख होता है इसलिए कबीर साहिब कहते हैं कि जब तुम्हारी उसने इतनी रक्षा की, बाहर आकर उसे भूल क्यों जाते हो। इसलिए सुमिरन, ध्यान ज़रूरी है जैसे कि कहा गया है:—

दु:ख में सब सुमिरन करें, सुख में करे न कोय,
जो सुख में सुमिरन करे, दु:ख काहे को होय।

क्योंकि आदमी भूल जाता है अर्थात् आप हैं परन्तु पूर्णता को भूल गये इसलिए सत्तगुरु को ज़रूरत है जो आपको जगाये व चिताये:—

मात पिता सुत सम्पत्ति दारा, मोह के ज्वाल जरै ॥

मोह का मतलब यह नहीं है कि इनसे प्यार नहीं करना। यह बात महाराज जी ने पिट्सबर्ग (अमरीका) में अपने अन्तिम सत्संग में बहुत साफ कर दी। वह कहते हैं आपको विचारधारा व रेडियेशन मुझ पर काम नहीं करती। करती थी! अब नहीं करती। क्यों? एक भेद बता दिया उन्होंने, उन्होंने कहा कि मैं प्यार करता हूँ लेकिन स्वार्थ के लिए नहीं करता इसलिए आपकी रेडियेशन काम नहीं करेगी। उन्होंने इस सत्संग में यह कहा कि बच्चों से, पत्नी से प्यार करो, प्यार करना पाप नहीं है लेकिन स्वार्थ के लिए नहीं करो बल्कि सच्चा प्यार करो। जो जिसको सच्चा प्यार करता है उसे कभी दुःख नहीं हो सकता तो फिर दुर्व्यवहार कैसे करेगा? ऐसा व्यवहार कैसे करेगा कि जिससे प्यार करता है उसकी बदनामी हो जाय, वह तो उसकी अपनी बदनामी

हो जायगी। मोह का मतलब यह नहीं कि प्यार करो। मोह अन्धा होता है कि यह मेरी चीज़ है इसलिए महाराज जी ने कहा था कि स्वार्थ के बिना जो प्यार है वह ठीक है। बहुत से लोग कहते हैं कि कुछ नहीं है संसार, मोह होता है; घर से भी छुड़वा देते हैं। महाराज जी कभी घर से छुडवाते थे? नहीं! वह कहते हैं पहले घर से प्यार शुरू करो। यह समझने की जरूरी बात है :—

मन तू हंसन से साहिब के भटकत काहे फिरै।

हंस कौन होता है? जिसको विवेक हो गया हो। ऐसे गुरु के पास बैठो जिसको विवेक है, जिसको यह ज्ञान है कि परमतत्त्व क्या है, अहंकार क्या है, बुद्धि क्या है और मन क्या है। वह आपको अपनी संगत से सच्चाई बता देगा। हंस क्या होता है, कभी देखा है हंस? हंस में यह गुण होता है कि दूध उसके सामने रखो तो सफ़ेदी पी जाता है पानी रह जाता है इसलिए हंस वह है जो जानता है कि सत्य क्या है, असत्य क्या है, ध्रुव पद 'ध्रुव' क्या है, आप के अन्दर असली तत्त्व

क्या है और माया क्या है। इसलिए हंसों से क्यों भटकते फिरते हो, अगर हंसों के पास आओगे तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा मोह नहीं रहेगा, प्रेम भले ही रहे।—

सत्तगुरु छोड़ और को ध्यावै, कारज इक ना सरै।

आप मनुष्य मानते हो तो आप को समझ नहीं आयेगी इसलिए गुरु को परमतत्त्व मानते हैं और इसीलिए उनके आगे झुकते हैं। सत्तगुरु तो सबसे ऊँचा है बाकी जो देवी-देवता हैं ये विचार हैं उनके। जो देवी-देवताओं में भटक रहे हैं उनके लिए कहा है कि सत्तगुरु की ओट में जाओ। देवी-देवता आपको थोड़े समय के लिए लाभ पहुँचा सकते है। गीता में भी लिखा है।—

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥

जो जिस-जिस रूप का भक्त है उसके रूप में ही मालिक उसको श्रद्धा देता है और उससे उसके रोज़ के काम सर जाते हैं परन्तु असली काम तब बनता है जब सत्तगुरु एक ही हो अर्थात् एक परमतत्त्व को आधार बनाकर चलो इसलिए एक मानो। गुरु एक

इसलिए माना जाता है कि एक ही पर विश्वास किया जाता है क्योंकि कहा है न:—

एक ही साधे सब सधे सब साधे सब जाय।

पतिव्रता स्त्री एक को मानती है। सत्तगुरु को छोड़ कर अगर आप कहीं जायेंगे तो भटकते रहेंगे:—

साधुन सेवा कर मन मेरे कोटिन ब्याधि टरै।
कहें कबीर सुनो भाई साधो सहज में जीव तरै॥

साधु की सेवा और फिर साधु को कह रहे हैं! साधु की तो बड़ी व्याख्या है। साधु वह है जो सब के लिए सत्तज्ञान देता है। साधु और फ़कीर एक है। फ़कीर का जीवन आपके सामने है। साधु यानि सत्तगुरु की सेवा—सेवा यह हाथ पाँव वाली नहीं है, यह भी सेवा है परन्तु राधास्वामी मतानुसार सेवा का असली मतलब है कि साधु या सत्तगुरु के वचन को आँखों से आँखें मिलाकर सुनो और सुनकर के गुनो और उस पर अमल करो, यह असली सेवा है। जो आपने सुना है उस पर जब

आप अमल करेंगे इस सेवा करने से सभी काम सिद्ध हो जायेंगे । गीता में भी लिखा है :—

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।

भगवद् गीता में यह नहीं लिखा कि कृष्ण की फिर उपासना करो वहाँ भी कहा है कि पहले जाकर के गुरु को झुको । झुकना क्यों है ? ज़रूरत है, गुरु के आगे जब तक झुकेंगे नहीं तब तक आपको ज्ञान नहीं मिलेगा । झुकने का क्या मतलब ? कि आपका अहंकार चला गया । मैंने काफ़ी पढ़ा था, महाराज जी के पास जब मैं गया था मैने गुरु धारण नहीं किया हुआ था। ब्राह्मण होने के नाते थोड़ा सा अहंकार था कि किसी के आगे झुकना नहीं, थोड़ा सा ही था परन्तु नफ़रत नहीं थी । पढ़ा था, एम.ए. पढ़ा, पीएच. डी. की, दस-बारह किताबें लिख डालीं, बड़ी ख्याति हो गई अमरीका में, इंग्लैंड में, सब जगह किताबें पढ़ी जाती हैं, बड़ा आनन्द व मज़ा था, पढ़ने व पढ़ाने के बाद जिससे कई छात्रों को ज्ञान भी हो गया । हर एक कक्षा में विद्यार्थी कहते थे, महाराज !

आपने हमारा जीवन बदल दिया। यह सब होते हुए अर्थात् यह सब पढ़ने लिखने के बाद जब महाराज जी के चरणों में आया तो सब स्लेट साफ़ ! कुछ नहीं !! इन चरणों के सिवाय मुझे कुछ नहीं चाहिए !!! उससे जो ज्ञान मिला है वह आपके साथ बाँट रहा हूँ। कोई पढ़ा लिखा हो, पीएच. डी. हो, यह हो, वह हो क्या है ! यहाँ दुनिया के अन्दर बहुत फिरते हैं पीएच. डी., अरे ! मुझे महाराज जी ने इसलिए नहीं चुना कि पीएच. डी. किये है। मेरा दिमाग़ साफ़ ! मैंने कहा महाराज जी ! आप ही हैं सब कुछ !! और मुझे यह श्लोक याद आया :—

यदा किंचिज् ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं,
तदा सर्वज्ञोऽस्मी त्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित्किञ्चिद् बुधजनसकाशादवगतं,
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः ॥

बड़ा अच्छा श्लोक है, किसी भक्त ने लिखा है। वह कहते हैं जब मुझे थोड़ा सा किताबों का ज्ञान हुआ तब मैं एक हाथी की तरह बड़े अभिमान में आ गया, मद में मस्त हो गया कि मुझे बहुत कुछ

आता है, सर्वज्ञ हूँ। ऐसा समझना रास्ते में रुकावट है। इस से अनपढ़ आदमी अच्छा है, पढ़ा हुआ धोखा खा जायेगा! वह कहते हैं कि जब मुझे ज्ञान हो गया तो हाथी की तरह मैं अभिमानी हुआ। परन्तु जब मैं प्रबुद्ध गुरु होशियारपुर में रहने वाले महाराज जो के पास गया, मैंने असली ज्ञान देखा, अरे! मुझे ज्ञान हुआ कि जो कुछ मैंने पढ़ा था वह तो मूर्खता थी, मैं तो मूर्ख ही था। कहाँ मैं समझता था कि मैं सर्वज्ञ हो गया। यह जानकर मेरा मद, मेरा अभिमान ऐसे चूर-२ हो गया, ऐसे टूट गया जैसे कि ओषधि दे देने से बुखार टूट जाता है। इसलिए महाराज जी के चरणों में जाकर :—

'तद्विद्धि प्रणिपातेन'

झुकने का मतलब क्या है? यह नहीं कि आप किसी के शरीर के आगे झुक रहे हैं। आप झुके हैं, आप को पता है तत्त्व का, आप जानना चाहते हैं, आप झुके हैं तो वह जो उस गुरु का प्रेम है वह आप ही आप तत्त्व ज्ञान दे देगा :—

'प्रणिपातेन'

झुकने के बाद फिर सवाल करो। सवाल करना

भी ज़रूरी है मास्टर जी ! परन्तु पहले झुक कर फिर सवाल करो। जो पहले ही से यह कहता है कि मुझे यह बताइए कि इसका मतलब क्या है फिर मैं आपकी बात मानूंगा, उसको ज्ञान नहीं हो सकता। दूसरी अवस्था है:—

'परिप्रश्नेन'

अर्थात् सवाल करो, सवाल का ज़वाब मिलेगा। जब सवाल-ज़वाब समाप्त हो जाता है, सवाल शिष्य है, ज़वाब गुरु है, गुरु शिष्य एक हो जाता है, तो विवेक हो जाता है, ज्ञान हो जाता है। महाराज जी की दया से मैं दावे से कहता हूँ सवाल करो ज़वाब दूंगा। इसलिए सवाल-ज़वाब ज़रूरी है :—

'प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया'

झुक कर के सवाल करो, सेवा करो तो गुरु प्रेम का ज़वाब प्रेम में अवश्य देंगे। गुरु कभी सेवा का ऋण नहीं रखता, रख ही नहीं सकता।

महाराज जी की कृपा से, ज्ञान से, विज्ञान से यह आज का सत्संग जो मैंने समझा आपको बताया है।

———

मासिक सन्देश

सितम्बर 1982

बिनु सत्संग विवेक न होई।
गुरु कृपा बिन सुलभ न सोई॥

मेरे प्यारे सत्संगियो :

राधा स्वामी व परम दयाल सहायी !

सन्त तुलसी दास जी की लिखी हुई यह चौपाई बहुत गहरे अर्थ रखती है। सन्तमत में तीन तत्व हैं गुरु, सत्संग और नाम। गुरु का मतलब मालिके कुल सर्वाधार, परमतत्व भी है और वह बाहरी गुरु भी है जो हमें उस मालिके कुल का ध्यान देता है, जिसके पास गये बिना शान्ति नहीं मिल सकती। गुरु यह ज्ञान केवल सत्संग द्वारा ही देता है, इसलिए सन्तमत या गुरुमत में सत्संग की बड़ी महिमा है। इसलिए सन्त तुलसीदास जी ने भी कहा है कि सत्संग के बिना विबेक या सच्चा ज्ञान नहीं मिल सकता और सत्संग

का अवसर मालिक की कृपा के बिना नहीं मिल सकता।

परम सन्त परम दयाल पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज ने 1968 से लेकर 1981 तक लगातार मुझे यह हिदायत दी कि मैं सत्संग लगातार कराया करूँ उन्होंने खुद 95 वर्ष की आयु तक सत्संग का काम नहीं छोड़ा। अमरीका के मर्सी हस्पताल में ऑपरेशन से पहले उन्होंने अपने अन्तिम सत्संग में मुझे लगातार सत्संग कराने की आज्ञा देते हुए कहा, "मानव दयाल! एक दिन ऐसा आ जायेगा जब तेरे लिए तू और मैं का झगड़ा खतम हो जायेगा, किन्तु इससे पहले तुम्हें महान् काम करना है।" जब से मैं अमरीका में प्रोफेसर की पदवी से इस्तीफा दे कर अपने परम गुरु की आज्ञा के अनुसार स्थायी रूप से होशियारपुर आ गया हूँ, तब से मुझे महान् काम का मतलब पूरी तरह से समझ में आ गया है और वह महान् काम है सत्संग कराना। गाँवों में, शहरों में और सत्संग केन्द्रों में जहाँ-2 मैं जा कर सत्संग कराता हूँ, मुझे सत्संग की महिमा का दिनोंदिन नया से नया अनुभव हो रहा है।

यह बात तो सही है कि सत्संग में आने वाला व्यक्ति सच्चे ज्ञान से लाभ उठाता ही है। न ही केवल सत्संगों में बल्कि मेरी यूनिवर्सिटी में पढ़ाने वाली कक्षाओं में भी ऐसा होता है कि कक्षा के अन्त में कुछ छात्र और छात्राएँ मेरे पास आ कर कहते हैं, "आपके पढ़ाने से हमारा जीवन सुधर गया।" मैंने यह अनुभव किया है कि ऐसे-2 छात्र, जिन्हें समाज और अध्यापक दुष्ट कहते हैं, वे दिल के बहुत ही अच्छे होते हैं। जब उन्हें प्यार से समझाया जाता है तो उनको सुधरने में समय नहीं लगता।

मेरा अनुभव यह है कि सत्संग न ही केवल सत्संगियों को बल्कि सत्संग देने वाले व्यक्ति को भी ऊँचा उठा देता है। परम दयाल जी महाराज बिलकुल ठीक कहते थे, "हे सत्संगियो! आप मेरे गुरु हो।" मैं परम दयाल जी का वह एहसान तो कभी नहीं भूल सकता, जो उन्होंने मुझ पर सच्चा ज्ञान दे कर किया। उस ज्ञान से मुझे अभयदान मिला। मेरे सभी सन्देह दूर हो गये और मैं जीवन्मुक्ति की अवस्था को समझ पाया हूँ। लेकिन

उनका मुझ पर सबसे बड़ा एहसान यह है कि उन्होंने मुझे ज़ात में गुम होने से पहले या ज़ात में गुम होने के लिए लगातार सत्संग कराने की आज्ञा दी। उनकी इस आज्ञा का पालन सदा करता रहूंगा।

अब मैं यह समझता हूँ कि जो सच्चा गुरु है और जिसे जीवन्मुक्ति का अनुभव हो गया है, वह स्वभाव से ही इसलिए सत्संग करायेगा, ताकि वह अपने ऊँचे अनुभव को दूसरों से बाँट सके। कुछ लोग यह समझते हैं कि सत्संग कराना ज़रूरी नहीं है लेकिन मैं इसमें सहमत नहीं हूँ। मेरा अनुभव यह कहता है कि सत्संग कराये बिना कोई भी सद्गुरु निज धाम पर नहीं पहुँच सकता। सन्त और सद्गुरु का अवतार दुःखी जीवों को पार लगाने के लिए होता है। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए सन्त व सद्गुरु खुद दुःखों को सहन करते हुए सब जीवों की भलाई करता है लेकिन ऐसे करते हुए उसकी अपनी भी भलाई हो जाती है और वह मंज़िले मक़सूद तक पहुँच जाता है। सत्संग की महिमा का पार नहीं है।

जुलाई के महीने में मैंने उज्जैन, इन्दौर, भोपाल, मोदीनगर और देहली में सत्संगों का दौरा किया। इन सत्संगों से मुझे बड़े विचित्र और नये-2 अनुभव हुए, जिनमें से कुछ अनुभवों को मैं आपसे बाँटना चाहता हूँ।

उज्जैन की पवित्र भूमि में परम दयाल जी ने जो मानवता का बीज बोया है मुझे उसकी हरीभरी खेती को देखने का साक्षात् अनुभव हुआ। मैं गद्गद हो गया और मैंने परम दयाल जी का लाख शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने मुझे सत्संग देने का महान् काम सौंपा। मेरे तीनों सत्संगों में उज्जैन तथा आसपास के गाँवों के सत्संगियों की संख्या हज़ारों तक थी। उन सब की श्रद्धा और प्रेम का अनुभव करके मेरे मन में यह विचार आया कि मालिके कुल मुझे इस लायक बनायें कि मैं उनके मानवता प्रचार के महान् कार्य को सफलता पूर्वक कर सकूँ और सत्संगियों को सच्चा ज्ञान दे कर ख़ुद मंज़िले मक़सूद पर पहुँचने से पहले उन्हें भी दयाल देश की ओर बढ़ने में सहायता दे सकूँ। मैंने इसी

दिये। उज्जैन में रामू बहन, बन्सी लाल जी तथा उज्जैन के सत्संगियों ने मुझे जो सम्मान दिया उसके लिए मैं उन का बहुत आभारी हूँ। परम दयाल जी की कृपा सब पर बनी रहे।

उज्जैन में तीन दिन सत्संग देने के बाद हमें इन्दौर जाना पड़ा। वहाँ पर हमारा ठहरने का प्रबन्ध जगत् माता जी, उनके परिवार तथा कुञ्जी लाल गोयल ने बहुत ही अच्छा करवाया। जगत् माता जी की प्रिय बेटी दयाल पुत्री लीला ने अपने स्कूल में परम दयाल जी की समाधि पर मानवता का झण्डा लहरवाया। एक सत्संग उस मिडल स्कूल में हुआ जिसमें परम दयाल जी महाराज इन्दौर जाने पर निवास किया करते थे और जहाँ पर आठ सौ से अधिक बच्चों को मानवता धर्म के आधार पर शिक्षा दी जाती है। इसके इलावा इन्दौर में पहली बार दो सार्वजनिक सत्संगों का आयोजन किया गया। ये सत्संग श्री अग्रवाल हाई स्कूल में रखे गये, जहाँ पर अस्सी प्रतिशत संख्या सनातन

धर्म, आर्य समाज और कई अन्य मतों वालों की थी। मैंने महाराज जी के नियमों के आधार पर सन्तमत की व्याख्या की और लोगों को बताया कि सन्तमत और खासकर राधास्वामीमत सत् सनातन धर्म से भिन्न नहीं है और न ही राधास्वामी नाम किसी व्यक्ति विशेष का है। दोनों सत्संगों में उन लोगों ने सन्तमत की प्रशंसा की और मानवता धर्म के असूलों को बहुत अच्छा बताया। इन सत्संगों का सैकड़ों लोगों के मन पर बहुत असर पड़ा और दोनों दिन सत्संग के अन्त में लगभग सभी श्रोताओं ने इतनी मस्ती से राधास्वामी कीर्तन किया कि उनमें से बहुत से व्यक्ति तालियाँ बजा कर झूमने लगे। अग्रवाल समाज के मुख्य नेताओं ने यह इच्छा प्रकट की है कि वे इन्दौर में मानवता मन्दिर के नाम से एक केन्द्र खोलना चाहते हैं। इस प्रभाव को देख कर मुझे परम दयाल जी के वे शब्द याद आ गये, जिनमें उन्होंने कहा था "यह मानवता और सत्यता का धर्म विश्व भर में फैलेगा, फैलेगा, फैलेगा।" सन्त के वचन कभी झूठे नहीं होते। मेरे परम गुरु परम दयाल जी तो सन्तों के सन्त थे।

[illegible] सब कुछ इस दृष्टि से नहीं लिख रहा कि मैं मानवता धर्म की तरफ़ जनता की बढ़ती हुई रुचि का ठेकेदार हूँ। मैं तो केवल परम दयाल जी महाराज की आज्ञा का अक्षरशः पालन कर रहा हूँ और यह सब कुछ परम दयाल जी से प्राप्त प्रेरणा के बल पर हो रहा है।

24 जुलाई को मोदीनगर में एक सार्वजनिक हाल में आम सत्संग रखा गया। इस सत्संग में वही उत्साह और श्रद्धा दिखाई दी, जो हर जगह अनुभव में आई। मोदीनगर वालों की श्रद्धा महान् है।

देहली में 25 जुलाई रविवार के दिन सलवान हाईस्कूल के हाल में सत्संग आयोजित किया गया, जिसमें महामहिम हजूर पीरे मुगाँ साहिब ने आशीर्वाद देते हुए सत्संग शुरू कराया। आश्चर्य की बात यह है कि ज़बर्दस्त मूसलाधार वर्षा होने के तथा सड़कों पर पानी की बाढ़ आ जाने के बावजूद भी सत्संगियों की संख्या काफ़ी रही। मेरे सत्संग के बाद अमरीकी आचार्य डा० विलियम

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

रोडवहाईज़र और एक अमरीकी सत्संगी श्री जैरलडीन मुरे ने भी सत्संग दिया। सभी सत्संगी इतने प्रभावित हुए कि मानो वह प्रवचनों में मह्व हो गये। मुझे सत्संगियों से मिल कर बड़ी खुशी हुई।

इस सत्संग के दौरे पर एक महत्त्वपूर्ण बात यह हुई कि देहली के एक विख्यात प्रकाशक 'आत्मा-राम एण्ड सन्ज़' से मेरे द्वारा लिखी गई, 'सिद्ध सत् पुरुष फ़कीर बाबा' पुस्तक प्रकाशित हो कर आ गई। देहली में इस पुस्तक को हज़ूर पीरे मुर्गां साहिब के करकमलों से मुक्त किया गया। अब यह किताब मानवता मन्दिर से भी उपलब्ध हो सकती है।

मैं तीस जुलाई 1982 से 15 सितम्बर 1982 तक अमरीका जा रहा हूँ। इस दौरान में 15 अगस्त का मासिक सत्संग अमरीकी आचार्य जो मेरी गैरहाज़िरी में होशियारपुर रह रहे हैं, करायेंगे। सितम्बर का मासिक सत्संग मैं खुद आ कर कराऊँगा। रविवासरीय सत्संग कमालपुर वाली माता जी कराती रहेंगी। रोज़ाना सत्संगों में परम दयाल श्री महाराज

के तथा मेरे टेप चलाये जायेंगे। मैंने बोर्ड ऑफ़ ट्रस्टीज को एक विशेष सत्संग में मन्दिर के प्रवन्ध के लिए निर्देश दे दिये हैं। अब मन्दिर के शान्त तथा पाक वातावरण की ख्याति विश्व भर में पहुँच चुकी है। अब आचार्य डा० रोडनहाईज़र के बाद दूसरे अमरीकी आचार्य कर्नल जोज़फ़ टक्कर जिनका नाम जय शिव शंकर भी है मानवता मन्दिर में आने वाले हैं। आचार्य टक्कर महाराज जी के 1970 से अनुयायी हैं और महाराज जी ने 1980 में उन्हें कैनेडा में आचार्य बनाया था। आचार्य जोज़फ़ टक्कर ने मानवता मन्दिर के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता का हलफ़नामा भेजा है जिस पर अमरीका के नोटरी पब्लिक के भी हस्ताक्षर हैं। यह हलफ़नामा मन्दिर की फाईल में रख दिया गया है। आचार्य जोज़फ़ टक्कर के बाद अमरीकी आचार्या श्रीमती थैल्या कार्टर जुलाई 1983 में मानवता मन्दिर में आ रही हैं। यह सारी प्रगति इस बात को प्रमाणित करती है कि परम दयाल जी महाराज ने मानवता धर्म को और शिक्षा को बदल देने का जो प्रण किया था वह उनकी ही शक्ति के कारण जल्द ही सफल होने

वाला है। इसका श्रेय सबसे पहले सत्संगियों को और ट्रस्ट के सदस्यों को है। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि परम दयाल जी का स्वप्न सच्चा साबित हो रहा है। मैं सब सत्संगियों को सच्चे दिल से शुभ कामनाएँ भेज रहा हूँ। राधास्वामी।

आपका फ़कीरमय

मानव

श्रद्धाञ्जलि

सब सत्संगियों को सूचित किया जाता है कि मानवता मन्दिर के ट्रस्ट ने 29-9-82 को हज़ूर महाराज परम दयाल परम सन्त बाबा फ़कीर चन्द जी महाराज की पहली वर्षी पर श्रद्धाञ्जलि भेंट करने का कार्यक्रम बनाया है। यह समारोह हज़ूर महाराज परम सन्त पीरे मुर्शा साहिब जी की अध्यक्षता में होगा। इस समारोह में पूज्य परम दयाल जी के उत्तराधिकारी हज़ूर मानव दयाल जी महाराज, हज़ूर आनन्द दयाल जी महाराज देहली वाले, हज़ूर आनन्द राव जी महाराज सिकन्दराबाद, हज़ूर सन्त तारा चन्द जी महाराज दिनोद, हज़ूर मुन्शीराम भगत जी महाराज, हज़ूर प्रेमानन्द जी महाराज, हज़ूर पृथ्वीनाथ पण्डित जी महाराज, महात्मा मेजर बृजलाल जी, महात्मा दुर्गादास जी चमन, महात्मा ठाकुर दास जी, मालिके कुल परम तत्त्व आधार परम सन्त परम दयाल हज़ूर बाबा फ़कीर चन्द जी महाराज के चरणों में श्रद्धाञ्जलि भेंट

करेंगे। हज़ूर मानव दयाल जी महाराज 25-9-82 से 27-9-82 तक दशहरे के प्रोग्राम के सिलसिले में सलवान पब्लिक हाई स्कूल, न्यू राजेन्द्र नगर नई, देहली में रहेंगे। जो सत्संगी उनसे मिलना चाहें वे सलवान पब्लिक हाई स्कूल में मिल सकते हैं। सब सत्संगियों से पुरज़ोर अपील है कि बड़ी धूमधाम से पहले 25-9-82 को देहली दशहरे के सत्संग पर पहुँचें। 27-9-82 को सुबह के सत्संग के बाद देहली में दशहरे का प्रोग्राम समाप्त हो जायेगा। इसके बाद सब सत्संगी भाई 29-9-82 को परम दयाल जी महाराज को श्रद्धाञ्जलि भेंट करने के लिए मानवता मन्दिर होशियारपुर को प्रस्थान करें।

नोट :—फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट यह बात स्पष्ट कर देना चाहता है कि यह श्रद्धाञ्जलि पहली और अन्तिम होगी।

निवेदक :—
प्रेजिडेण्ट फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट,
मानवता मन्दिर होशियारपुर।

—:—

परम सन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज की इन्दौर में पत्रकारों के साथ चर्चा

(1)

अमेरिका में भारतीय दर्शन के प्रति झुकाव: मानव जी

इन्दौर समाचार 21-7-82 (से साभार)

(नगर प्रतिनिधि द्वारा)

इन्दौर, 20 जुलाई। संत श्री मानव दयाल महाराज ने आज यहाँ कहा कि आज यह फ़ैशन बन गया है कि जो व्यक्ति या साधु संत अमेरिका जाकर वहाँ कोई कार्य करे तभी वह बड़ा और विद्वान् माना जाता है। किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है।

सन्तश्री आज सुबह पत्रकारों से चर्चा कर रहे थे। संतश्री वर्षों तक अमेरिका में रहे हैं एवं उन्होंने वहां भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक विषयों पर

पढ़ाया है एवं पुस्तकें लिखकर भारतीय संस्कृति का प्रचार किया है।

मानव दयाल जो ने कहा कि अमेरिका में धर्म के प्रति सरकार हस्तक्षेप नहीं करती किन्तु वहाँ पैसा और वैभव अधिक होने के कारण लोगों में धर्म का महत्त्व समझने की फुरसत नहीं है। नई पीढ़ी में तो धर्म का ज्ञान वहाँ है ही नहीं। किन्तु इस पीढ़ी में भारतीय दर्शन को देख व सुनकर धर्म के प्रति जिज्ञासा बढ़ी है।

श्री मानव ने कहा कि अमेरिका में धर्म का व्यापारीकरण कथित धर्मावलंबियों ने कर दिया है। पैसा कमाया जा रहा है जिससे धर्म के प्रति लोगों में मायूसी फैल रही है। धर्म का फैलाव करने वाले वहाँ केवल नाम के लिए जाते हैं।

(2)

अमेरिका में हिन्दू संस्कृति की ओर आकर्षण बढ़ा

नैतिकता में गिरावट का कारण हमारा नेतृत्व

—संत मानव मुनि

स्वदेश, इन्दौर 21-7-82 (से साभार)

(नगर प्रतिनिधि द्वारा)

इन्दौर २० जुलाई। दर्शनशास्त्र के ख्याति प्राप्त प्रोफेसर एवं हिन्दू संस्कृति का प्रचार प्रसार करने वाले संत मानव दयाल जी महाराज ने कहा कि अमेरिका निवासियों को आध्यात्मिक जिज्ञासा है, वे हिन्दू संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं। विदेशों में जो संत महात्मा जाते हैं यदि उन्होंने हिन्दू संस्कृति को सही ढंग से प्रस्तुत किया तो विदेशियों को मानसिक शांति मिलेगी और वे

हमारे धर्म व संस्कृति के प्रति आकर्षित होंगे।

संत मानव दयाल जो हाल ही में अमेरिका से लौटे हैं और अब आप आज होशियारपुर (पंजाब) में रहकर हिन्दू संस्कृति व नैतिक शिक्षा का प्रचार प्रसार कर रहे हैं, ने बताया कि अमेरिकन मानसिक विकार से ग्रस्त हैं यही कारण है कि वहाँ तलाक का औसत करीब 60 प्रतिशत है। हमारा भारतीय दर्शन उन्हें मानसिक शांति प्रदान कर सकता है।

सन्त मानव दयाल आज सुबह न्यू पलासिया स्थित श्री ओमशंकर गुप्ता के निवास पर पत्रकारों से चर्चा कर रहें थे। आपने कहा कि भारत के लोगों के चरित्र व राजनैतिक स्तर में जो गिरावट आई है उसके लिए जवाबदार हमारा वर्तमान नेतृत्व है। राजनैतिक स्वार्थ के लिए हम राष्ट्रहित को भी भूल जाते हैं। विदेशों में राष्ट्रहित के बाद पार्टी व व्यक्ति के हित को देखा जाता है। लेकित हमारे यहाँ विपरीत स्थिति है। व्यक्ति हित को सर्वोपरि मानकर ही राजनीति चल रही है। इसी से नैतिक स्तर में गिरावट आई है। आपने कहा कि वे

होशियारपुर में रहकर नैतिक शिक्षा के प्रचार प्रसार में अपना योगदान देंगे। आपने पंजाब में हो रहे झगड़ों के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ये झगड़े धर्म के मूल तत्त्व को नहीं समझने के कारण हो रहे हैं। आपने विश्वास व्यक्त किया कि देश की जनता राजनैतिक बुराइयों को दूर करने में सक्षम है।

शोक समाचार

बड़े खेद के साथ सब सज्जनों को सूचित किया जाता है कि महात्मा राम रखा मल चोडा ता. 6-7-82 गुरु पूर्णिमा को प्रातः काल अपना पांचभौतिक शरीर त्याग कर सदा के लिए परमधाम सिधार गये हैं। वो हजूर परम दयाल जो महाराज के परम अनुयायी थे। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दें।

मानव मन्दिर का सारा परिवार तथा ट्रस्ट के सभी ट्रस्टी अपने वरिष्ठ ट्रस्टी के देह त्यागने पर श्रद्धाञ्जलि सहित शोक प्रकट करते हैं और उनके शोक-सन्तप्त कुटुम्बियों से सहानुभूति प्रकट करते हैं।

सैक्रेटरी

परम सन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज का अक्टूबर महीने का टूर प्रोग्राम

8-15 अक्टूबर 1982	—	बनारस, खानपुर, मगराहा और राधास्वामी धाम ।
16-19 ,, ,,	—	लखनऊ और मिश्रिक तीर्थ ।
20-27 ,, ,,	—	मुरादाबाद और बिलारी ।
28-29 ,, ,,	—	बनवारीपुर और सहारनपुर ।
30 ,, ,,	—	होशियारपुर वापसी ।

हजूर मानव दयाल

लेखक :— दरवेश

मेरे परम दयाल के दुलारे, मानव दयाल सत्तगुरु।
पकड़ लिये हैं चरण तुम्हारे, हजूर मानव दयाल सत्तगुरु ।।

तुम्हीं पिता हो तुम्हीं हो माता, तुम्हीं सखा हो तुम्हीं होभ्राता।
तुम्हीं प्रभु देवता हमारे, हजूर मानव दयाल सत्तगुरु ।।

बचा लो भवसिंधु से बचा लो, उठाके सीने मुझे लगा लो।
मैं आ गिरा हूँ तेरे द्वारे, हजूर मानव दयाल सत्तगुरु ।।

तुझी से माँगूंगा मैं उमर भर, न जाऊँगा छोड़कर तेरा दर।
जिऊँ मरूँगा इसी द्वारे, हजूर मानव दयाल सत्तगुरु ।।

गिरे हुए को उठाया तूने, गले से अपने लगाया तूने।
मैं जी रहा हूँ तेरे सहारे, हजूर मानव दयाल सत्तगुरु ।।

अलख अनाम अगम अगोचर, दिखाये जीवों को घट के अन्दर।
प्रकाश सूरज व चाँद तारे, हजूर मानव दयाल सत्तगुरु ।।

गगन में बंसी की धुन बजाई, बजाई बीणा सुनी शहनाई।
दिखाये भीतर अजब नजारे, हजूर मानव दयाल सत्तगुरु ।।

सुना है दरवेश तारे लाखों, नसीब बिगड़े सँवारे लाखों।
मेरी भी किश्ती लगा किनारे, हजूर मानव दयाल सत्तगुरु ।।

प्रार्थना

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
अलख अगम और अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधस्वामी।

परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

राम भी हो और कृष्ण भी तुम।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

वन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥

तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस लो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥

रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥

सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय॥

मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाद।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
19-9-82 को होगा।

Regd. No. 2626574 SEPTEMBER 10th 1982
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283.Sh.A.Hamanth Rao
H.No.1-10-3-194/8
Hamayun Nagar Hydrabad
A.P.500028.

From

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2012

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)